





ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्यभ्योनमः ॥ अथ त्रयोदशाध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व प्रथमअध्याय  
 तैलैके षष्ठेअध्यायपर्यंत प्रथमषट्कविषे त्वंपदार्थकानिरूपणकन्या ॥ और सप्तमअध्यायतैलैके द्वादशेअध्यायपर्यंत द्वितीयषट्कविषे तत्पदार्थकानिरूपणकन्या ॥  
 अब तिन शोधित तत्त्वंपदार्थकाअभेदरूप महावाक्यकेअर्थकू कथनकरणेहारा तथातत्त्वज्ञानहैप्रधानजिसविषे ऐसाजो त्रयोदशअध्यायतैआदिलैकेअष्टादशे  
 अध्यायपर्यंत तृतीयषट्कहै तिसतृतीयषट्ककाआरंभकरेहैं ॥ तहांपूर्व द्वादशेअध्यायविषे ( तेषामहंसमुद्धर्त्ता मृत्युसंसारसागराद्भवामि ) इसवचनकरिकै श्रीभग  
 वाननैं आपणेविषे अधिकारीजनोका मृत्युसंसारसागरतैउद्धारकर्त्तापणा कथनकन्याथा ॥ सो आत्मविषयकअज्ञानरूपमृत्युतै इनअधिकारीजनोकाउद्धरण  
 आत्मकेज्ञानतैविना संभवतानहीं ॥ किंतु ( तरतिशोकमात्मवित् ॥ तरत्याविद्यांविततांहृदियस्मिन्निवेशिते ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन आत्मकेज्ञानतैहीं अविद्या  
 रूपअज्ञानकीनिवृत्ति कथनकरेहैं ॥ यातै जिसप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै तिसमृत्युसंसारकीनिवृत्ति होवैहै ॥ तथा जिसतत्त्वज्ञानकरिकैयुक्त अद्वैष्टत्वादिकगुणों  
 वालेसंन्यासी पूर्वद्वादशेअध्यायविषेवर्णनकरेथे ॥ सो आत्मतत्त्वज्ञान अबी अवश्यकरिकैकहणेयोग्यहै ॥ और सोतत्त्वज्ञान अद्वितीयपरमात्माकेसाथि जीवात्मा  
 केअभेदकूहीविषयकरेहै ॥ काहेतै जन्ममरणतैआदिलैकैजितनैकीअनर्थहैं तिनसर्वअनर्थोंका जीवब्रह्मकाभेदभमहीं कारणहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( मृत्योःसमृत्युमा  
 प्रोतियइहनानेवपश्यति ) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष इसअद्वितीयब्रह्मविषे द्वैतभावकूदेखेहै ॥ सोपुरुष बारंवार जन्ममरणकूप्राप्तहोवैहै इति ॥ ऐसेभेदभमकीनिवृत्ति  
 जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैविनाहोवैनहीं ॥ किंतु जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैहीं ताभेदभमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकेविषेयहशंकाहोवैहै ॥ मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं मैंकर्ताहूं  
 मैंभोक्ताहूं इसप्रकारकाअनुभव सर्वप्राणीयोविषेहोवैहै ॥ यातै यहजीवात्मातों सुखदुःखादिरूपसंसारवालेहैं ॥ तथा शरीरशरीरविषे भिन्नभिन्नहैं ॥ जोकदाचित्  
 सर्वशरीरोविषे एकहींआत्माहोवै तों एकशरीरविषेसुखदुःखकेअनुभवहुए सर्वशरीरोविषे तासुखदुःखकाअनुभव होणाचाहीये सोहोतानहीं ॥ यातै शरीरशरीरविषे  
 आत्मा भिन्नभिन्नहै ॥ और परमात्मादेवतों तासुखदुःखादिरूपसंसारतैरहितहै तथा एकहै ॥ ऐसेअनेकसंसारीजीवोंका एकअसंसारीपरमात्माकेसाथिअभेद  
 संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ सो सुखदुःखादिरूपसंसार तथाभिन्नपणा अविद्याकल्पितअनात्मवस्तुकेहीं धर्महैं ॥ जीवात्माका संसारीपणा तथाभिन्नपणा  
 धर्महैनहीं याप्रकारकाविवेचन अवश्यकन्याचाहीये ॥ तिसविवेचनकेअर्थ देह इंद्रिय अंतःकरण प्राण इत्यादिरूपक्षेत्रोंतै भिन्नकरिकै क्षेत्रज्ञनामाजीवात्मापुरुष  
 तिनसर्वक्षेत्रोंविषेएकहींहै तथानिर्विकारहै इसअर्थकेप्रतिपादनकरणेवासतै इसत्रयोदशेअध्यायविषे क्षेत्रक्षेत्रज्ञका विवेचनकरेहैं ॥ तहांपूर्व सप्तमअध्यायविषे श्रीभग



वानुनै जा भूमिआदिकअष्टप्रकारकीअपरानामाप्रकृति क्षेत्ररूपकरिकैसूचनकरीथी ॥ तथा जीवरूप पराप्रकृति क्षेत्रज्ञरूपकरिकैसूचनकरीथी ॥ तिसीक्षेत्रक्षेत्रज्ञरूप दोनोप्रकृतियोंकेस्वरूपकूं भिन्नभिन्नकरिकैनिरूपणकरताहुआ श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

( मू० श्लो० ) श्रीभगवानुवाच ॥ इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते ॥ एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञमितितद्विदः ॥ १ ॥ इदम् । शरीरम् । कौंतेय । क्षेत्रम् । इति । अभिधीयते । एतत् । यः । वेत्ति । तं । प्राहुः । क्षेत्रज्ञम् । इति । तद्विदः ॥ १ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन यह शरीर क्षेत्र इसनामकरिकै कहाजावैहै और इसक्षेत्रकूं जो जानेहै तिसंकूं क्षेत्रकेजानणेहारेपुरुष क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ १ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेकौंतेय अर्थात् हेकुंतीमाताकेपुत्रअर्जुन ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंसहित तथाचतुष्टयअंतःकरणसहित तथापंचप्राणोंसहित जोयह सुखदुःखकेभोगकाआयतनरूप शरीरहै ॥ सोशरीर क्षेत्र इसनामकरिकै कहाजावैहै ॥ अब क्षेत्रशब्दकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ तहां अविद्याकरिकै जो आत्मक्षयकरेहै तथाविद्याकरिकै आत्माकूं रक्षणकरेहैं ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा रागद्वेषादिकदोषोंकरिकैयुक्तपुरुष क्षयकूं प्राप्तहोवै जिसकरिकै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा शमदमादिकसाधनयुक्तपुरुषकूं जन्ममरणादिकअर्थरूपक्षयतैं जोरक्षणकरेहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवासर्वकालविषे दीपशिखाकीन्यांई जोआप क्षयकूं प्राप्तहोतां जावैहैं ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा सुखदुःखादिरूपफलकीउत्पत्तिविषे जो लोकप्रसिद्धभूमिरूपक्षेत्रकीन्यांई आचरणकरेहै ताकानाम क्षेत्रहै इति ॥ ऐसे इसशरीररूपक्षेत्रकूं जो जानेहै ॥ अर्थात् इसशरीररूपक्षेत्रविषे जो अहंममअभिमानकरेहै ॥ तिसंकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे कृषीकरणेहारा कृषीवलपुरुष भूमिरूपक्षेत्रकेफलकाभोक्ताहोवैहैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी इससंघातरूप क्षेत्रकेसुखदुःखरूपफलका भोक्ताहोवै हैं ॥ यातैं इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कौन कथनकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ( तद्विदः इति ) हेअर्जुन यहक्षेत्र असत्जडदुःखरूपहै ॥ और यहक्षेत्रज्ञआत्मा सत्चित्तानंदरूपहै ॥ इसप्रकारतैं इस क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेभेदकूं जानणेहारे जेविवेकीपुरुषहैं ॥ तेविवेकीपुरुषहीं इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञइसनामकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ इहांकिसीकमूलपुस्तकविषे ( श्रीभगवानुवाच ॥ इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते ) इसश्लोकतैंपूर्व अर्जुनकाप्रश्नरूप यहश्लोकहै ( अर्जुनउवाच ॥ प्रकृतिंपुरुषंचैवक्षेत्रक्षेत्रज्ञमेवच ॥ एतद्वेदितुमिच्छामिज्ञानंज्ञेयंचकेशव ) अर्थयह ॥ हेकेशव प्रकृतिक्याहै तथापुरुषक्याहै तथाक्षेत्रक्याहै तथाक्षेत्रज्ञक्याहै तथाज्ञानक्याहै तथाज्ञेयक्याहै ॥ इससर्वअर्थके



जानेकी मैइच्छाकरताहूं ॥ आपकृपाकरिकै सोसर्वअर्थ हमारेप्रति कथनकरो इति ॥ परंतु यहश्लोक श्रीभाष्यकारोंनेआदिलेके किसीभीटीकाकारनें ग्रहणक  
न्यानहीं ॥ यातें यह जान्याजावैहै ॥ यहअर्जुनकेप्रश्नकाश्लोक पश्चात् किसीविद्वान्नें पायाहै इसीकारणतें इसत्रयोदशोअध्यायकेप्रारंभविषे यहश्लोक हमनें  
लिख्यानहीं इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार देहइंद्रियअंतःकरणादिरूपक्षेत्रतैविलक्षण स्वप्रकाशक्षेत्रज्ञकूंकथनकरिकै अबतिसक्षेत्रज्ञनामाजीवात्माकाजो  
असंसारीपरमात्माकेसाथि एकतारूप पारमार्थिकस्वरूपहै तिसस्वरूपकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोज्ञानंयत्तज्ज्ञानंमतंमम ॥ २ ॥ क्षेत्रज्ञं । चं । अपि । मां । वि  
द्धि । सर्वक्षेत्रेषु । भारत । क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः । ज्ञानं । यत् । तत् । ज्ञानं । मतं । मम ॥ २ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेभारत  
पुनः सर्वक्षेत्रोविषेस्थित क्षेत्रज्ञकूं तूं मैअद्वितीयब्रह्मरूप हीं जान ऐसेक्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंका जो ज्ञानहै सो ज्ञानही मैपरमेश्वरकूं  
अभिमतहै ॥ २ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेभारत अर्थात् हेभरतराजोकेवंशविषेउत्पन्नहूआअर्जुन ॥ अथवा आत्माकारवृत्तिकानाम भाहै ॥ ताआत्माकारअखंडवृत्तिविषे जोसर्वदा रमण  
करेहै अथवा ताअखंडवृत्तिविषे जो सर्वदा प्रीतिवालाहै ताकानाम भारतहै ॥ अर्थात् हेआत्मज्ञानविषेप्रीतिवालाअर्जुन ॥ पूर्वउक्त देहइंद्रियादिसंघातरूप सर्व  
क्षेत्रोविषे अधिष्ठानरूपकरिकैस्थित जोएकक्षेत्रज्ञहै ॥ जोक्षेत्रज्ञ स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै तथानित्यहै तथाविभुहै तथा अविद्याकरिकैआरोपितहैंकर्तृत्वभोक्तृ  
त्वादिकधर्म जिसविषे ॥ ऐसेतिसक्षेत्रज्ञकूं तूं अर्जुन तिस अविद्याकल्पितरूपका परित्यागकरिकै मैपरमेश्वररूप जान ॥ अर्थात् अंतःकरणादिकसर्वउपाधियोंतें  
रहित तिसप्रत्यक्आत्मारूपक्षेत्रज्ञकूं तूं असंसारीअद्वितीयब्रह्मानंदरूप जान ॥ तहांश्रुति ॥ ( अयमात्माब्रह्म अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि प्रज्ञानमानंदंब्रह्म ॥ ) अर्थ  
यह ॥ यहजीवात्माब्रह्मरूपहै ॥ तथा मैब्रह्मरूपहूं ॥ तथा सोसत्ब्रह्म तूंहैं ॥ तथा यहआनंदरूप प्रज्ञाननामाजीवात्मा ब्रह्मरूपहै इति ॥ हेअर्जुन इसपूर्वउक्त क्षेत्रका  
तथाक्षेत्रज्ञका जोज्ञानहै ॥ अर्थात् मायाकरिकैकल्पितहोणेतें यहक्षेत्रतों रज्जुसर्पकीन्याई मिथ्यारूपहै ॥ और तिसक्षेत्ररूपभ्रमकाअधिष्ठानहोणेतें यहक्षेत्रज्ञनामा  
आत्मा परमार्थसत्यहै ॥ याप्रकारतें जो तिसक्षेत्रका तथाक्षेत्रज्ञका ज्ञानहै ॥ सोईहीज्ञान मोक्षकासाधनहोणेतें मैपरमेश्वरकूं ज्ञानतेंभिन्न दूसरेजितनेकी लौकिक  
वैदिकज्ञानहै तेसर्वज्ञान ताअविद्याके विरोधीहैंनहीं ॥ यातें तेसर्वज्ञान अज्ञानरूपकरिकैसंमतहै ॥ अर्थात् तिसीज्ञानकूं मैपरमेश्वर अविद्याकाविरोधी प्रकाश  
रूप मानताहूं ॥ इसप्रकारकेज्ञानरूपहीहै इति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतों ( क्षेत्रज्ञंचापि ) इसवचनविषे जो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै पूर्वउक्तक्षेत्रकाभी ग्रहणकन्याहै ॥



अर्थात् क्षेत्रज्ञरूप तथा क्षेत्ररूप मैपरमेश्वरकूहीं तूं जान ॥ तहां क्षेत्रज्ञनामाजीवात्माकी ब्रह्मरूपताविषेतौ पूर्वहीं श्रुतिरूपप्रमाण कथनकन्याहै ॥ और क्षेत्रकी ब्रह्मरूपताविषेतौ ( ब्रह्मैवेदंसर्व सर्वस्वत्विवंदब्रह्म ) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ २ ॥ \* ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिके संक्षेपतैकथनकन्ये हुएअर्थकूं अब विस्तारतैकहणेवासतै श्रीभगवान् आरंभकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) तत्क्षेत्रं यच्च यादृक् च यद्विकारियतश्च यत् ॥ स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥ ३ ॥ तत् । क्षेत्रं । यत् । च । यादृक् । च । यद्विकारि । यतः । च । यत् । सः । च । यः । यत्प्रभावः । च । तत् । समासेन । मे । शृणु ॥ ३ ॥ ( इति पदच्छेदः ) ॥ हे अर्जुन सो शरीररूप क्षेत्र जिसस्वभाववालाहै तथा जिसइच्छादिकधर्मवालाहै तथा जिसइंद्रियादिकविकारोंवालाहै तथा जिसक्षेत्ररूपकारणतै जो कार्य उत्पन्नहोवैहै तथा सो क्षेत्रज्ञ जिसस्वभाववालाहै तथा जिसप्रभाववालाहै सो क्षेत्रज्ञका स्वरूप मेरे वचनतै तूं संक्षेपकरिके श्रवणकर ॥ ३ ॥ ( इति पदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन ( इदं शरीरं कौंतेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ) इस पूर्वउक्तवचनकरिके कथनकन्याजो देह इंद्रिय अंतःकरण इत्यादिक जडवर्गरूपक्षेत्रहै ॥ सो क्षेत्र आपणे स्वरूपकरिके जिस जड दृश्य परिच्छिन्न आदिकस्वभाववालाहै ॥ तथा सो क्षेत्र जिन इच्छाद्वेषादिक धर्मोंवालाहै ॥ तथा सो क्षेत्र जिन इंद्रियादिकविकारोंकरिके युक्तहै ॥ तथा जिस क्षेत्ररूपकारणतै जो कार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ अथवा ( यत् श्रव्यत् ) इस वचनका यह दूसरा अर्थ करणा ॥ सो क्षेत्र जिस प्रकृति पुरुष के संग योगतै उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा जिस स्थावरजंगमादिकभेदकरिके भिन्नभिन्नहै इति ॥ इतनै करिके क्षेत्र के स्वरूपका विचारकन्या ॥ अब क्षेत्र क्षेत्रज्ञ के स्वरूपका विचार करेहैं ( सच इति ) हे अर्जुन ( एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ) इस वचनकरिके पूर्व कथनकन्याजो क्षेत्रज्ञहै ॥ सो क्षेत्रज्ञभी आपणे स्वरूपते जिस स्वप्रकाशचैतन्य आनंदस्वभाववालाहै ॥ तथा उपाधिकृत जिन शक्तिरूपप्रभावोंवालाहै इति ॥ तिन सर्वविशेषणोंकरिके विशिष्ट क्षेत्र के यथार्थ स्वरूपकूं तथा क्षेत्रज्ञ के यथार्थ स्वरूपकूं तूं अर्जुन मैपरमेश्वर के वचनतै संक्षेपकरिके श्रवणकर ॥ अर्थात् तिस क्षेत्र क्षेत्रज्ञ के स्वरूपकूं श्रवणकरिके तूं निश्चयकर इति ॥ ३ ॥ \* ॥ शंका ॥ हे भगवन् पूर्वश्लोकविषे आपनै यह वचन कहाथा ॥ तिस क्षेत्र क्षेत्रज्ञ के स्वरूपकूं तूं मेरे वचनतै संक्षेपकरिके श्रवणकर इति ॥ सो यह आपका कहणा तबी संभवै ॥ जबी सो क्षेत्र क्षेत्रज्ञका स्वरूप पूर्वकि सीनै विस्तारतै कथनकन्याहोवै ॥ काहेतै जो अर्थ पूर्वकि सीनै विस्तारतै कथन करीताहै ॥ सो अर्थहीं पश्चात् संक्षेपकरिके कथन कन्याजावैहै ॥ पूर्व विस्तारतै नही कथनकन्ये हुए अर्थका संक्षेपकरिके कथन संभवतानहीं ॥ सो इस क्षेत्र क्षेत्रज्ञका स्वरूप पूर्वकिनोंनै विस्तारकरिके कथनकन्याहै ॥



जिस विस्तारकरिकै कथनक-येहुए अर्थका आप अभी संक्षेपकरिकै कथन करते हो ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए ॥ श्री भगवान् श्रोता पुरुषों के बुद्धि विषे तिस क्षेत्र क्षेत्रज्ञ के स्वरूप विषय प्रीतिके उत्पन्न करने वासतै तिस क्षेत्र क्षेत्रज्ञ के स्वरूप की स्तुति करता हुआ कहे है ॥

( मू० २८० ) ऋषिभिर्बहुधा गीतं छंदोभिर्विविधैः पृथक् ॥ ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ४ ॥ ऋषिभिः । बहुधा । गीतं । छंदोभिः । विविधैः । पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैः । च । एव । हेतुमद्भिः । विनिश्चितैः ॥ ४ ॥ ( इति पदच्छेदः ) ॥ हे अर्जुन सो क्षेत्र क्षेत्रज्ञ का स्वरूप वसिष्ठादिक ऋषियों ने बहुत प्रकारतै निरूपण क-या है तथा बहुत प्रकारके ऋगादिक वेदों ने भी भिन्न भिन्न करिकै कथन क-या है तथा युक्तियों वाले तथा निश्चित अर्थ वाले ऐसे ब्रह्मसूत्रपदों ने भी सो स्वरूप बहुत प्रकारतै कथन क-या है ॥ ४ ॥ ( इति पदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन यह क्षेत्र क्षेत्रज्ञ का स्वरूप वसिष्ठादिक ऋषियों ने भी योगशास्त्र विषे धारणा ध्यान का विषय रूप करिकै बहुत प्रकारतै निरूपण क-या है ॥ इतने कहणे करिकै श्री भगवान् ने ता स्वरूप विषे योगशास्त्र करिकै प्रतिपाद्य पणा कथन क-या ॥ तथा विविध छंदों ने भी सो स्वरूप पृथक् पृथक् करिकै निरूपण क-या है ॥ अर्थात् नित्य नैमित्तिक काम्य कर्मादिकों के विषय करने हारे जे ऋगादिक वेदों के मंत्र हैं तथा ब्राह्मण हैं तिनो ने भी भिन्न भिन्न करिकै सो क्षेत्र क्षेत्रज्ञ का स्वरूप निरूपण क-या है ॥ इतने कहणे करिकै श्री भगवान् ने ता स्वरूप विषे कर्मकांड करिकै प्रतिपाद्य पणा कथन क-या तथा ब्रह्मसूत्रपदों ने भी सो क्षेत्र क्षेत्रज्ञ का स्वरूप बहुत प्रकारतै निरूपण क-या है ॥ तहां ब्रह्म इस पदका सूत्र इस पदके साथि तथा पद इस पदके साथि अन्वय करनेतै ब्रह्मसूत्र ब्रह्मपद यह दो प्रकारके वचन सिद्ध होवै हैं ॥ तहां जिन वाक्यों ने किंचित् मात्र व्यवधान करिकै ब्रह्म का प्रतिपादन करीता है तिन वाक्यों का नाम ब्रह्मसूत्र है जैसे ( यतो वा इमानि भूतानि जायंते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयंत्य भिसंविशन्ति तद्ब्रह्म ॥ ) अर्थ यह ॥ जिसतै यह सर्व भूत उत्पन्न होवै हैं ॥ तथा उत्पन्न हुए ते सर्व भूत जिस करिकै जीवत हैं ॥ तथा विनाश कूं प्राप्त हुए ते सर्व भूत जिस विषे लय भाव कूं प्राप्त होवै हैं सोई ही ब्रह्म है इति ॥ इत्यादिक ब्रह्म के तटस्थ लक्षण कूं प्रतिपादन करने हारे जे उपनिषद् वाक्य हैं तिन वाक्यों का नाम ब्रह्मसूत्र है ॥ और जिन वाक्यों ने साक्षात् ही ता ब्रह्म का प्रतिपादन करीता है तिन वाक्यों का नाम ब्रह्मपद है ॥ जैसे ब्रह्म के स्वरूप लक्षण कूं प्रतिपादन करने हारे ( सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म ) इत्यादिक उपनिषद् वाक्य हैं ॥ ऐसे ब्रह्मसूत्र रूप वाक्यों ने तथा ब्रह्मपद रूप वाक्यों ने भी सो क्षेत्र क्षेत्रज्ञ का स्वरूप बहुत प्रकारतै निरूपण क-या है कैसे हैं ते ब्रह्मसूत्र पद रूप वाक्य हेतुमत् हैं ॥ अर्थात् इष्ट अर्थ के साधक अनेक युक्तियों के प्रतिपादक हैं ॥ ते युक्तियां यह हैं ॥ छांदोग्य उपनिषद् विषे उद्दालक ऋषि ने श्वेतकेतु पुत्र के प्रति यह वचन कहा है ॥ ( सदेव सौम्ये दमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम् ) ॥ अर्थ यह ॥ हे प्रिय दर्शन श्वेतकेतु यह दृश्यमान जगत् आपणी उत्पत्ति तै पूर्व सत् रूप होता भया ॥ सो सत् एक अद्वितीय रूप होता भया



इति ॥ इसप्रकारका उपक्रमकरिके पश्चात् यहवचनकहा है ॥ ( तद्वैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं तस्मादसतःसदजायत ) ॥ अर्थयह ॥ केईकवादीतों ऐसेकहेहैं ॥ यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैपूव असत्होताभया ॥ सोअसत् एकअद्वितीयरूपहोताभया ॥ तिसअसत्कारणतै यहसत्कार्य उत्पन्नहोताभया इति ॥ इसवचनकरिके नास्तिकोंकेमतकाकथनकरिके तिसतै अनंतर सोउदालकऋषि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ ( कुतस्तुखलुसौम्यैवंस्यादितिहोवाचकथमसतःसज्जायेत ) ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन श्वेतकेतु यहनास्तिकोंकाकहणा कैसेसंभवैगा ॥ किंतु नहींसंभवैगा ॥ जिसकारणतै असत्कारणतै सत्कार्यकी उत्पत्ति कदाचित्भी होतीनहीं ॥ जोकदाचित् असत्तैभी सत्कीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तों असत्वंध्यापुत्रतैभी सत्पुत्रकीउत्पत्तिहोनीचहीये ॥ और होती नहीं ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकंप्रतिपादनकरणेहारे तेब्रह्मसूत्रपदरूपवचनहैं ॥ पुनःकैसेहैतेब्रह्मसूत्रपदरूपवचन ॥ विनिश्चितहैं ॥ अर्थात् उपक्रम उपसंहारवाक्योंकीएकवाक्यताकरिके संशयतैरहितअर्थकेप्रतिपादकहैं ॥ इसप्रकारकेब्रह्मसूत्रपदरूपवाक्योंनैभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतै निरूपण कन्याहै ॥ इतनैकहणेकरिके श्रीभगवान् नै तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपविषे ज्ञानकांडकरिकेप्रतिपाद्यपणा निरूपणकन्या ॥ इसप्रकार पूव वसिष्ठादिकऋषियोंनै तथाऋगादिकवेदोंकेमंत्रोंनै तथाब्रह्मसूत्रपदोंनै अत्यंतविस्तारतैकथनकन्याजो क्षेत्रक्षेत्रज्ञका यथार्थस्वरूपहै ॥ तिसीस्वरूपकूं मैरुष्णभगवान् तैअर्जुनकेताई संक्षेपकरिके कथनकरताहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर इति ॥ अथवा ( ब्रह्मसूत्रपदैः ) इसवचनविषे ब्रह्मसूत्रहोवै तेहींपदहोवै याप्रकारका कर्मधारयसमास अंगीकारकरणा ॥ तहां ( आत्मेत्येवोपासीत ) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष सर्वत्रव्यापकआत्मामैहूं याप्रकारकाचिंतनकरे ॥ इत्यादिकवाक्यतों विद्यासूत्र कहेजावैहैं ॥ और ( नसवेदयथापशुः ) ॥ अर्थयह ॥ आपणेआत्मातै देवताकूंभिन्नमानिके जोपुरुष तादेवताकीउपासनाकरैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष पशुकीन्यांई किंचित्मात्रभी जानतानहीं ॥ इत्यादिकवचनतों अविद्यासूत्रकहेजावैहैं इति ॥ और किंसीटीकाविषेतों ( ब्रह्मसूत्रपदैः ) इसवचनकरिके ( जन्माद्यस्ययतः ) इत्यादिकवेदांतसूत्रोंकाग्रहणकन्याहैइति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपजानणेविषे अर्जुनकीरुचि उत्पन्नकरिके अब श्रीभगवान् तिस अर्जुनकेताई दोश्लोककरिके प्रथम क्षेत्रकास्वरूप कथनकरैहै ॥

( मू० श्लो० ) महाभूतान्यहंकारोबुद्धिरव्यक्तमेवच ॥ इंद्रियाणिदशैकंचपंचचेंद्रियगोचराः ॥ ५ ॥ इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघातश्चेतनाधृतिः ॥ एतत्क्षेत्रंसमासिनसविकारमुदाहृतम् ॥ ६ ॥ महाभूतानि । अहंकारः । बुद्धिः । अव्यक्तम् । एव । च । इंद्रियाणि । दश । ऐकं । च । पंच । च । इंद्रियगोचराः ॥ इच्छा । द्वेषः । सुखं । दुःखं । संघातः । चेतना । धृतिः । एतत् । क्षेत्रं । समासेन ।



सर्विकारम् । उदाहृतम् ॥ ६ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन पंचमहाभूत अहंकारं बुद्धिं तथा अव्यक्तं तथादश श्रोत्रादिकं इंद्रियं  
तथा एकमनं तथा श्रोत्रादिकं इंद्रियोंके विषय शब्दादिकं पंच तथा ईच्छा द्वेष सुख दुःख संघात चेतना धृति येन सर्व विकारस  
हित संक्षेपं करिके क्षेत्ररूप कहें ॥ ६ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पृथिवी जल तेज वायु आकाश यह जे पंचमहाभूत है ॥ तथा तिनपंचमहाभूतोंका कारणरूप जो अभिमानलक्षण अहंकार है ॥ तथा तिसअ  
हंकारका कारणरूप जो अव्यवसायलक्षण महत्तत्त्वनामा बुद्धि है ॥ तथा तिसमहत्तत्त्वनामा बुद्धिका कारणरूप तथा सत्त्वरजतमगुणात्मक ऐसा जो प्रधानरूप अव्यक्त  
है ॥ जो अव्यक्त सर्वका कारणरूप ही है ॥ किसीका भी कार्यरूप है नहीं ॥ यह महाभूतोंतैं आदिलेके अव्यक्तपर्यंत अष्टप्रकारकी प्रकृति कही जावै है ॥ यह अर्थ सां  
ख्यमतके अनुसार कथन कन्या ॥ अब वेदांतमतके अनुसार अर्थ करे हैं ॥ तहां अव्यक्तशब्द करिकेतों अनिर्वचनीय अव्याकृतका ग्रहणकरणा जिस अव्याकृतकूं  
( मममायादुरत्यया ) इसवचन करिके श्रीभगवान् नैं मायानामा परमेश्वरकी शक्तिरूप कथन कन्या है ॥ और बुद्धिशब्द करिकेतों सृष्टिके आदिकालविषे स्रष्टव्यप्रपंच  
विषयक मायाकावृत्तिरूप ईक्षणका ग्रहणकरणा ॥ और अहंकारशब्द करिकेतों तिसईक्षणतैं अनंतर भावी तामायाकावृत्तिरूप बहुतहोणेके संकल्पका ग्रहणकरणा  
॥ तिससंकल्पतैं अनंतर आकाशादिकक्रम करिके पंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति ग्रहण करणी इति ॥ और सांख्यशास्त्र करिके सिद्धजे अव्यक्त महत्तत्त्व अहंकार यह तीन  
तत्त्व हैं ते तीनों वेदांतसिद्धांतविषे अंगीकार करे नहीं ॥ उलटा ( ईक्षतेर्नाशब्दम् ) इत्यादिक सूत्रोंके व्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं ते सांख्यशास्त्रकल्पित प्रधानादिकपदा  
र्थ बहुतविस्तारतैं खंडन करे हैं तहां ( मायांतु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम् ॥ तेषां योगानुगता अपश्यन् देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाम् ) ॥ इसश्रुति करिके प्रतिपादन  
करीजा मायानामा परमेश्वरकी शक्ति है ॥ सामायाशक्ति ही ईहां श्रीभगवान् नैं अव्यक्तशब्द करिके कथन करी है ॥ और ( तदैक्षत ) इसश्रुतिनैं कथन कन्या जो स्रष्टव्य  
जगत्विषयक मायाकावृत्तिरूप ईक्षण है ॥ सोईक्षण ही ईहां श्रीभगवान् नैं बुद्धिशब्द करिके कथन कन्या है ॥ और ॥ ( बहुस्यां प्रजायेय ) ॥ इसश्रुतिनैं कथन कन्या जो  
तामायाकावृत्तिरूप बहुतहोणेका संकल्प है ॥ सोपरमेश्वरका संकल्प ही ईहां श्रीभगवान् नैं अहंकारशब्द करिके कथन कन्या है ॥ तिसतैं अनंतर ( तस्माद्वा एतस्मादात्म  
न आकाशः संभूत आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्रेरापः अद्भ्यः पृथिवी ) इसश्रुतिनैं यथाक्रमतैं आकाशादिकपंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति कथन करी है ॥ इत्यादिक श्रुतिप्रमाणक  
रिके सिद्ध यह वेदांतपक्ष ही श्रेष्ठ है इति ॥ और श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यह जे पंचज्ञान इंद्रिय हैं ॥ तथा वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यह जे पंच कर्म इंद्रिय हैं  
यह दोनों मिलिके दश इंद्रिय होवैं ॥ तथा संकल्पविकल्परूप जो एकमन है ॥ तथा तिन श्रोत्रादिक दश इंद्रियोंके जेशब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंचविषय हैं ॥ तहां श्रोत्रा



दिकपंचज्ञानइंद्रियोंकेतो यहशब्दादिकपंच ज्ञाप्यत्वरूपकरिकेविषयहैं और वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकेतौ तेशब्दादिकपंच कार्यत्वरूपकरिकेविषयहैं ॥ तहां पूर्व कथनकरीहुई अष्टप्रकारकी प्रकृति पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचविषय एकमन इनसर्वोंकूं सांख्यशास्त्रवाले चौबीसतत्व कहेहैं इति ॥ और सुखविषे तथासुख केसाधनोविषे यहसुख हमारेकूं प्राप्तहोवै तथायहसुखकेसाधन हमारेकूं प्राप्तहोवैं याप्रकारकी स्पृहारूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं शास्त्रविषे कामभीकहेहैं तथारागभी कहेहैं ताकानाम इच्छाहै ॥ और दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोविषे यहदुःख हमारेकूं मतप्राप्तहोवै तथादुःखकेसाधन हमारेकूं मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकी जा पूर्वउक्त स्पृहाका विरोधी चित्तकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं शास्त्रविषे क्रोधभीकहेहैं तथाईर्ष्याभीकहेहैं ताकानाम द्वेषहै ॥ और निरुपाधिकइच्छाकाविषयभूत तथाधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथापरमात्मसुखकाअभिव्यंजक ऐसीजा चित्तकीवृत्ति विशेषहै ताकानाम सुखहै ॥ और निरुपाधिकद्वेषकाविषयभूत तथा अधर्महैअसाधारणकारण जिसका ऐसीजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम दुःखहै ॥ औरपंचमहाभूतोंकापरिणामरूप ऐसाजोइंद्रियोंसाहितशरीरहै ताकानाम संघातहै ॥ और स्वरूपज्ञानकाअभिव्यंजक तथाप्रमाणहैअसाधारणकारणजिसका ऐसीजा प्रमाज्ञाननामा चित्तकी वृत्तिविशेषहैताकानाम चेतनाहै ॥ और व्याकुलताकूं प्राप्तहुए देहइंद्रियोंकेस्थितकरणेकाहेतुरूप जोप्रयत्नहै ताकानाम धृतिहै ॥ इहां इच्छादिकोंकाग्रहण अंतःकरणकेसर्वधर्मोंका उपलक्षणहै ॥ तेअंतःकरणकेधर्म श्रुतिविषेयह कहेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ ( कामःसंकल्पोविचिकित्साश्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृतिर्हीर्ष्याभीरित्येतत्सर्वमनएव ) ॥ अर्थयह ॥ इच्छासंकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धृति अधृति लज्जा वृत्तिज्ञान भय यहसर्व मनरूपहींहैं इति ॥ यहश्रुतिवचन मृद्घटः इसवचनकीन्यांई मनरूपउपादानकारणकेसाथि कामादिककार्योंका अभेदकथनकरिके तिनकामा दिककार्योंविषेमनकाधर्मपणा कथनकरेहै ॥ इसप्रकार पंचमहाभूतोंतैं आदिलैके धृतिपर्यंत पूर्वकथनकन्येहुए जितनैंकी जडपदार्थ हैं ॥ तेसर्वजडपदार्थ क्षेत्रज्ञना मासाक्षीकरिकेभास्यमानहोणेतैं तिसक्षेत्रज्ञसाक्षीतैंभिन्नहैं ॥ ऐसेयहसर्वजडपदार्थ हमनैं संक्षेपकरिके क्षेत्र इसनामकरिकेकथनकन्येहैं ॥ तथा तेक्षेत्ररूपसर्वपदार्थ भास्यअचेतनरूपहींहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् शरीरइंद्रियोंकासंघातहीं चेतनरूपहोणेतैं क्षेत्रज्ञहै ॥ इसप्रकार लोकायतिक मानेहैं ॥ और चेतन रूपक्षणिक विज्ञान हीं आत्माहै ॥ इसप्रकार सुगत मानेहैं ॥ और इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञान यहसर्व आत्माकेलिंगहैं इसप्रकार नैयायिकमानेहैं ॥ यातैं पंचमहाभूतोंतैं आदिलैकेधृतिपर्यंत यहसर्व क्षेत्ररूपहैं यहआपकाकहणा कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताक्षेत्रकेलक्षणकूं कहेहै ( सविकारमिति ) तहां जन्मतैंआदिलैकेविनाशपर्यंत जोपरिणाम ताकानाम विकारहै ॥ तिसविकारसाहितजोहोवै ताकानाम सविकारहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिनाशादिकविकारोंवालेका नाम सविकारहै ॥ तहां पंचमहाभूतोंतैंआदिलैकेधृतिपर्यंत जेपदार्थ पूर्वकथनकन्येहै ॥ तेसर्वपदार्थ सविकाररूपहैं ॥ यातैं तेसर्वपदार्थ तिसविकारकेसाक्षी



होइसकैनहीं ॥ काहेतै आपणाउत्पत्तिविनाश आपणेकरिकैदेखाजातानहीं ॥ और ताउत्पत्तिनाशतैभिन्न दूसरेभी जितनैकी आपणेधर्महै ॥ तिनधर्मोंकाभी आपणेदर्शनतैविना दर्शन संभवतानहीं ॥ जिसकारणतै धर्मिकैदर्शनतै अनंतरहीं ताकेधर्मोंकादर्शनहोवैहै ॥ तहांजोकदाचित् आपणेकरिकैहीं आपणादर्शन मानिये ॥ तौ तादर्शनरूपक्रियाका कर्त्तापणा तथाकर्मपणा आपणेविषेप्राप्त होवैगा ॥ सो एकहींवस्तुविषे एकहींकालविषे एकहींक्रियाका कर्त्तापणा तथाकर्मपणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातै सविकारवस्तु ताउत्पत्तिनाशादिकविकारका साक्षीहोइसकैनहीं ॥ किंतु निर्विकारवस्तुहीं तिनसर्वविकारोंकासाक्षी सिद्ध होवैहै ॥ यातै यहअर्थसिद्धभया ॥ विकारीपणाहीं तिसक्षेत्रकाचिन्हहै ॥ अर्थात् जिसजिसपदार्थविषे सोविकारीपणाहै ॥ सोसोपदार्थ क्षेत्ररूपहीं जानणा ॥ कोई नामलैकेपरिगणन ताक्षेत्रकाचिन्हहैनहीं इति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारक्षेत्रकेस्वरूपकाप्रतिपादनकरिकै तिसक्षेत्रज्ञकुं क्षेत्रतैभिन्नकरिकै विस्तारतै प्रतिपादनकरणेवास्तै तिसक्षेत्रज्ञकेज्ञानकीयोग्यताअर्थ श्रीभगवान् प्रथम अमानित्वादिकवीससाधनोंकुं पंचश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) अमानित्वमदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥ आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥ अमानित्वम् । अदंभित्वम् । अहिंसा । क्षांतिः । आर्जवम् । आचार्योपासनम् । शौचम् । स्थैर्यम् । आत्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन अमानिपणा अदंभिपणा अहिंसा क्षांति आर्जव आचार्यकीउपासना शौचं स्थैर्य आत्माकानिग्रह यहसर्व ज्ञानकेसाधन होणेतै ज्ञानरूपहै ॥ ७ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ तहां जेगुण आपणेविषेविद्यमानहैं तथाजेगुण आपणेविषेनहींविद्यमानहैं ॥ ऐसे विद्यमानगुणोंकरिकै तथाअविद्यमानगुणोंकरिकै जाआपणीस्तुतिहै ताकानाम मानीपणाहै ॥ तामानीपणेतै जोरहितहोणाहै ताकानाम अमानित्वहै ॥ १ ॥ और लाभपूजाख्यातिकेवास्तै जो लोकोंकेआगे आपणेधर्मोंकाप्रगट करणाहै ताकानाम दंभीपणाहै ॥ तादंभीपणेतै जो रहितहोणाहै ताकानाम अदंभित्वहै ॥ २ ॥ और शरीरमनवाणीकरिकै जो प्राणीयोंकापीडनहै ताकानाम हिंसाहै ॥ ताहिंसातै जो रहितहोणाहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ ३ ॥ और चित्तकेकोधादिकविकारोंका कारणरूप जो दुष्टपुरुषोंकृत अपराधहै ताअपराधकेप्राप्त हुएभी जो निर्विकारचित्तपणेकरिकै तिसअपराधका सहनकरणाहै ताकानाम क्षांति है ॥ ४ ॥ और जैसाआपणेहृदयविषेहोवै तैसाहीबाह्यव्यवहारकरणा याप्रकारकाजो अकुटिलपणाहै ताकानाम आर्जवहै ॥ अर्थात् अन्यप्राणीयोंकीवंचनाकरणेतैरहितहोणेकानाम आर्जवहै ॥ ५ ॥ और ब्रह्मविद्याकाउपदेश करणेहाराजो आचार्यहै ॥ तिसआचार्यका जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक पूजननमस्कारादिकोंकरिकैसेवनहै ताकानाम आचार्योपासनहै ॥ ६ ॥ और शुद्धिकानाम



शौच है ॥ सोशौच दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौबाह्यशौचहोवै है ॥ और दूसरा अंतरशौचहोवै है ॥ तहां जलमृत्तिकाकरिके शरीरकेमलोंका जोप्रक्षालन है ताकानाम बाह्यशौच है ॥ और विषयोंविषेदोषदर्शनरूप विरोधीवासनावोंकरिके मनके रागद्वेषादिकमलोंकी जोनिवृत्तिकरणी है ताकानाम अंतरशौच है ॥ ७ ॥ और मोक्षकेसाधनोंविषे प्रवृत्तहुएपुरुषकूं अनेकप्रकारकेविघ्नोंकेप्राप्तहुएभी तिसउद्यमका नपरित्यागकरिके जो पुनःपुनः प्रयत्नकीअधिकता है ताकानाम स्थैर्य है ॥ ८ ॥ और देहइंद्रियोंकासंघातरूपआत्माका मोक्षतैप्रतिकूलविषे स्वभावतैप्राप्तप्रवृत्तिकूं निरुद्धकरिके जो मोक्षकेसाधनोंविषेहीं व्यवस्थापनहै ताकानाम आत्मविनिग्रह है ॥ ९ ॥ यहअमानित्वादिकसर्व ज्ञानकेसाधनहोणेतै ज्ञानरूपकहेहैं ॥ इसप्रकारतै इसश्लोकका तथावक्ष्यमाणश्लोकोंका एकादशश्लोकके ( एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तम् ) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

( मू०श्लोक ) इंद्रियार्थेषुवैराग्यमनहंकारएवच ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥ इंद्रियार्थेषु । वैराग्यम् । अनहंकारः । एव । च । जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥ ( इतिप० ) ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेशब्दादिकविषयोंविषे जोवैराग्यहै तथा अहंकारतैजोरहितपणाहै तथा जन्म मृत्यु व्याधि दुःख दोष इनसर्वोंकाजोपुनः पुनःदर्शनहै ॥ ८ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेशब्दादिकविषयोंविषे अथवा इसलोकके तथापरलोकके विषयभोगोंविषे रागकीविरोधी जा अस्पृहारूप चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम वैराग्यहै ॥ १० ॥ और लोकविषे आपणीस्तुतिके अभावहुएभी मनविषेप्रगटहुआ जो मैसर्वतैउत्कृष्टहूं याप्रकारकागर्वहै ताकानाम अहंकारहै ॥ ताअहंकारकाजो अभावहै ताकानाम अनहंकारहै ॥ ११ ॥ और माताकेउदरविषे नवमासपर्यंतनिवासकरिके योनिद्वारा जोबाह्य निकसणाहै ताकानाम जन्म है ॥ और प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषे सर्वममस्थानोंकाजोछेदनहै ताकानाम मृत्युहै ॥ और जिसअवस्थाविषे बुद्धिकीमंदता तथासर्वअंगोंकोशिथिलता तथास्वजनादिकृतपरिभव इत्यादिकदोष प्राप्त होवैहैं ताअवस्थाका नाम जराहै ॥ और ज्वरअतीसारआदिकरोगोंका नाम व्याधिहै ॥ और अध्यात्म अधिभूत अधिदैव यहतीनोंउपद्रवहैंनिमित्त जिसविषे ऐसाजो इष्टवस्तुकेवियोगजन्य तथाआनिष्टवस्तुकेसंयोगजन्य चित्तकापरितापरूप परिणामविशेषहै ताकानाम दुःखहै ॥ और वात पित्त श्लेष्म भल मूत्र इत्यादिकोंकरिकेपरिपूर्ण होणेतै जो इसशरीरविषेनिंदितपणाहै ताकानाम दोषहै ॥ ऐसे जन्मका तथामृत्युका तथाजराका तथाव्याधियोंका तथादुःखोंका तथादोषका जोअनुदर्शनहै ॥ अर्थात् पुनःपुनः विचारकरिकेदेखणाहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि दुःख इनपांचोंविषेदोषका पुनः



पुनः दर्शनहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनच्यारोंविषे दुःखरूपदोषका जोपुनःपुनः दर्शनहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनच्यारोंविषे दुःखका तथादोषका जो पुनःपुनः दर्शनहै ॥ तहां जन्मविषेतों माताकेउदरविषे नवमासपर्यंत अत्यंतसंकुचितहोइकैस्थितहोणा ॥ तथा माताकेमलविषेस्थितकृमियोंकरि कैदंशनहोणा ॥ तथा माताकेजठराग्निकरि कैदाहहोणा ॥ तथा जरायुचर्मकरि कैवेष्टितहोणा तथा जन्मकालविषे प्रसववायुकरि कैआकर्षणहोणा ॥ तथा अत्यंत अल्पयोनियंत्रतैनिकसणा ॥ तथा मलमूत्रविषेस्थितहोणा इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोषताजन्मविषेहैं ॥ और मृत्युविषेतों सर्वनाडीयोंका आकर्षण होणा तथा मर्मस्थानोंकाछेदनहोणा ॥ तथा प्राणोंकाआकुंचनहोणा ॥ तथा ऊर्ध्वश्वासहोणे ॥ तथा अत्यंतव्यथाकरि कै मलमूत्रादिकोंकाबाह्य निकसणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष तामृत्युविषेहै ॥ और जराअवस्थाविषेतों सर्वअंगोंकीशिथिलताहोणी ॥ तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकी मंदताहोणी ॥ तथा शरीरविषेकंपादिकहोणे ॥ तथाकासश्वासहोणा ॥ तथा उठतेहुए नीचैपडिजाणा ॥ तथा आपणेस्वजनोंकरि कैनिरादरकूं प्राप्तहोणा ॥ तथा शरीरकेद्वारोंतैं मलमूत्रलाला आदिकोंकाप्राप्तहोणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष ताजराअवस्थाविषेहैं ॥ और ज्वरादिकव्याधियोंविषे तों शरीरविषेदुर्बलताहोणी ॥ तथा शीतज्वरादिकोंकेवेगकरि कै परितापादिकहोणे ॥ तथा अत्यंतकटुकबायऔषधोंकापानकरणा ॥ तथा देहविषेदुर्गंधहोणा ॥ तथा स्वेदादिकोंकानिकसणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष तिनव्याधियोंविषेहै ॥ तेजन्ममरणादिकोंकेदुःख तथादोष आत्मपुराणकेप्रथमअध्या यविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां संक्षेपतैंकथनकन्येहैं ॥ याप्रकारकेदुःखदोषोंकादर्शन विषयोंतैंवैराग्यकाहेतुहोणेतैं आत्मज्ञानविषे उपकारकरेहै ॥ यातैं इनअधिकारीजनोंनैसोदुःखदोषोंकादर्शन अवश्यकरि कैसंपादनकरणा ॥ १२ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

( मू० श्लो० ) असक्तिरनभिष्वंगःपुत्रदारगृहादिषु ॥ नित्यंचसमचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ असक्तिः । अनभिष्वंगः । पुत्रदारगृहादिषु । नित्यं । च । समचित्तत्वम् । इष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन पुत्रस्त्रीगृहादिकपदार्थोंविषे सक्तितैरहितहोणा तथा अभिष्वंगतैरहितहोणा तथा इष्टानिष्टकी प्राप्तिविषे सर्वदा समचित्तरहणा ॥ ९ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥ ॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहपदार्थ हमारेहैं इतनैअभिमानमात्रकरि कै जो तिनपदार्थोंविषेप्रीतिहै ॥ ताकानाम सक्तिहै ॥ तिससक्तितैरहितकानाम असक्तिहै ॥ १३ ॥ और यहपदार्थ मैंहीं याप्रकारकीअभेदभावनाकरि कै जो तिनपदार्थोंविषेप्रीतिकीअतिशयताहै ॥ अर्थात् तिनपदार्थोंकेसुखीदुःखीहुए मैंहीं सुखीदुःखीहोवूंहं याप्रकारका जोअत्यंतअभिनिवेशहै ताकानाम अभिष्वंगहै ॥ ताअभिष्वंगतैरहितहोणैकानाम अनभिष्वंगहै ॥ १४ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सक्ति अभिष्वंग यह



दोनों किनपदार्थोंविषे परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ( पुत्रदारगृहादिषुइति ) हेअर्जुन पुत्रोंविषे तथास्त्रीयोंविषे तथागृहों विषे सा सक्ति तथाअभिष्वंग परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ इहां ( पुत्रदारगृहादिषु ) इसवचनविषेस्थितजो आदिशब्दहै ॥ ताआदिशब्दकरिकै इनोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकीस्नेहकेविषय धन भृत्य आदिकपदार्थहैं तिनसर्वोंकाग्रहणकरणा ॥ अर्थात् स्नेहकेविषयसर्वपदार्थोंविषे सक्तितैरहितहोणा तथाअभिष्वंगतैरहितहोणा ॥ और इष्टअनिष्टकीप्राप्तिविषे सर्वदा समचित्तहोणा ॥ अर्थात् प्रियपदार्थोंकीप्राप्तिविषेतों हर्षकूं नहींकरणा ॥ और अप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिविषे विषादकूं नहींकरणा ॥ इसीकानाम समचित्तपणाहै ॥ १५ ॥ इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

( मू० श्लो० ) मयिचानन्ययोगेनभक्तिरव्यभिचारिणी ॥ विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ १० ॥ मयि । चै । अनन्ययोगेन । भक्तिः । अव्यभिचारिणी । विविक्तदेशसेवित्वम् । अरतिः । जनसंसदि ॥ १० ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन अनन्ययोगकरिकै अव्यभिचारिणी ऐसीजा मैंपरमेश्वराविषे भक्तिहै तथा एकांतदेशकासेवनहै तथा विषयीजनोंकीसभाविषे जाअर्प्रीतिहै ॥ १० ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंभगवान्वासुदेवपमेश्वराविषे जाभक्तिहै ॥ अर्थात् यहपरमेश्वर सर्वतैंउत्कृष्टहै याप्रकारके सर्वतैंउत्कृष्टताज्ञानपूर्वक जा मेरेविषे निरतिशयप्रीतिहै ॥ कैसीहोवैसाभक्ति ॥ अनन्ययोगकरिकैअव्यभिचारिणीहोवै ॥ तहां इसभगवान्वासुदेवतैंपरे दूसराकोईहैनहीं यातैं सोभगवान्वासुदेवहीं हमारीगतिहै याप्रकारका जोनिश्चयहै ताकानाम अनन्ययोगहै ॥ ऐसेअनन्ययोगकरिकै जाभक्ति अव्यभिचारिणीहै ॥ अर्थात् किसीभीप्रतिकूलहेतुनैं निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसी भक्तिभी ज्ञानकाहीहेतुहै ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ ( प्रीतिर्नयावन्मयिवासुदेवेनमुच्यतेदेहयोगेनतावत् ) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकी जबपर्यंत मैंभगवान्वासुदेवविषे निरतिशयप्रीतिनहींहै ॥ तबपर्यंत यह अधिकारीपुरुष देहकेसंबंधतैरहितहोवैनहीं इति ॥ १६ ॥ और विविक्तदेशकासेवि त्वजोहै ॥ तहां जोदेश स्वभावतैंहीशुद्धहोवै ॥ अथवा संस्कारोंकरिकैशुद्धकन्याहोवै ॥ तथा अशुचिसर्पव्याघ्रादिकोंतैंरहितहोवै ॥ तथा चित्तकीप्रसन्नता करणेहाराहोवै ॥ तादेशकानाम विविक्तदेशहै ॥ ऐसा नदीतीर पर्वतकीगुहा आदिकजोदेशहै ॥ ऐसेविविक्तदेशकेसेवनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम विविक्त देशसेवित्वहै ॥ १७ ॥ और आत्मज्ञानतैंविमुख तथाविषयभोगलंपटताका उपदेशकरणेहारे ऐसेजे विषयीबहिर्मुखजनहैं ॥ तिनविषयीजनोंकीजासभाहै जासभा तत्त्वज्ञानका अत्यंतप्रतिकूलहै ॥ ताविषयीपुरुषोंकीसभाविषे जो अरतिहै अर्थात् तासभाविषे जो नहींरमणकरणाहै ॥ १८ ॥ और तत्त्वज्ञानकेअनुकूल



ऐसीजा महात्माजनोंकीसभाहै ॥ तिससभाविषेतों इसअधिकारीजननें अवश्यकरिकैप्रीतिकरणी ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥  
 ( संगःसर्वात्मनाहेयःसचेत्यक्तुंनशक्यते ॥ ससद्भिःसहकर्तव्यःसतांसंगोहिभेषजम् ) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीजननें सर्वप्रकारकरिकै संगकापरित्यागकरणा ॥  
 और जोकदाचित् सर्वप्रकारतैं तासंगकापरित्याग नहींकीयाजावै ॥ तौभी इसअधिकारीजननें विषयीबहिर्मुखपुरुषोंकासंग कदाचित्भी नहींकरणा ॥ किंतु  
 महात्माजनोंकेसाथि सोसंगकरणा ॥ जिसकारणतैं सोमहात्माजनोंकासंग इससंसाररूपरोगकेनिवृत्तकरणेका भेषजहै इति ॥ १० ॥ \* ॥ किंच ॥

( मू० श्लो० ) अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ॥ एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोऽन्यथा ॥ ११ ॥ अध्यात्मज्ञाननित्य  
 त्वम् । तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् । एतत् । ज्ञानम् । इति । प्रोक्तम् । अज्ञानम् । यत् । अतः । अन्यथा ॥ ११ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥  
 हेअर्जुन अध्यात्मज्ञानविषेजानिष्ठाहै तथार्तत्त्वज्ञानकेप्रयोजनकाजोदर्शनहै यहअमानित्वादिकसर्व ज्ञान इसनामकरिकै कथनकरैहैं  
 ईनोतैं विपरीत जेमानित्वादिकहैं तेसर्व अज्ञानरूपहीहैं ॥ ११ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आत्माकूंआश्रयणकरिकै प्रवृत्तहुआजो आत्मअनात्मविवेकज्ञानहै ताकानाम अध्यात्मज्ञानहै ॥ तिसअध्यात्मज्ञानविषेहीं जाअत्यंत  
 निष्ठाहै ताकानाम अध्यात्मज्ञाननित्यत्वहै ॥ जिसकारणतैं तिसविवेकविषेनिष्ठावान्पुरुषहीं महावाक्यार्थज्ञानविषे समर्थहोवैहै ॥ इसकारणतैं इसअधिकारी  
 पुरुषनें तिसअध्यात्मज्ञानविषेनिष्ठा अवश्यकरिकैकरणी ॥ १२ ॥ और तत्त्वज्ञानकेअर्थका जोदर्शनहै ॥ तहां ( अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि ) इत्यादिकवेदांतवाक्यहैं  
 कारणजिसके तथाअमानित्वादिकसर्वसाधनोंकेपरिपाककाफलरूप ऐसाजो भैरवरूपहूं याप्रकारकासाक्षात्कारहै ताकानाम तत्त्वज्ञानहै ॥ ऐसेतत्त्वज्ञानकाजो अर्थहै  
 अर्थात् अविद्यादिकसर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिरूप तथापरमानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षरूपप्रयोजनहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकेमोक्षरूपअर्थका जोदर्शनहै ॥ अर्थात् पुनःपुनःविचा  
 रकरिकैदेखणाहै ताकानाम तत्त्वज्ञानार्थदर्शनहै ॥ २० ॥ ऐसातत्त्वज्ञानार्थदर्शनभी इसअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकैकर्तव्यहै ॥ काहेतैं तिसतत्त्वज्ञानके  
 फलकेदर्शनहुएतैंअनंतरहीं तिसकेसाधनोंविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ फलकेज्ञानतैंविना तिसकेसाधनोंविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार अमानित्वतैंआदिलेके तत्त्वज्ञा  
 नार्थदर्शनपर्यंत कथनकन्येजेवीस २० साधनहैं ॥ तेवीससाधन आत्मज्ञानकीप्राप्तिकेहेतुरूपहोणेतैं ज्ञान इसनामकरिकैकथनकन्येहैं ॥ इनअमानित्वादिकसाधनोंतैं  
 विपरीत जेमानित्व दंभित्व हिंसा अक्षांति अनार्जव इत्यादिकहैं ॥ तेमानित्वादिक आत्मज्ञानकेविरोधीहोणेतैं अज्ञान इसनामकरिकैकथनकन्येहैं ॥ यातैं इन  
 अधिकारीपुरुषोंनें तिनअज्ञाननामा मानित्वदंभित्वादिकोंकापरित्यागकरिकै तेज्ञाननामा अमानित्वअदंभित्वादिकवीससाधन अवश्यकरिकैसंपादनकरणे



इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् अमानित्वतै आदितै केतत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत पूर्वकथनकन्ये ज्ञाननामा वीससाधनहैं ॥ तिनसाधनोंकरिकै कौनवस्तु जानणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् षट्श्लोकोंकरिकै तिसज्ञेयवस्तुकानिरूपणकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ॥ अनादिमत्परंब्रह्मनसत्तन्नासदुच्यते ॥ १२ ॥ ज्ञेयं । यत् । तत् । प्रवक्ष्यामि । यत् । ज्ञात्वा । अमृतम् । अश्नुते । अनादिमत् । परं । ब्रह्म । न । सत् । तत् । न । असत् । उच्यते ॥ १२ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन मुमुक्षुजननै जोवस्तु जानणेयोग्यहै सोज्ञेयवस्तु में तुमारेताई कथनकरताहूं जिसज्ञेयवस्तुकूं जानिकै यहमुमुक्षु अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहै सोज्ञेयवस्तु अनादिमत् परं ब्रह्म है सोब्रह्म नहींताँ सत् कहाजावैहै तथा नहीं असत् कहाजावैहै ॥ १२ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसमुमुक्षुजननै पूर्वउक्त अमानित्वादिकसाधनोंकरिकै जोवस्तु जानणेयोग्यहै ॥ सोज्ञेयवस्तुमें भगवान् तैअर्जुनकेताई स्पष्टकरिकै कथनकरता हूं ॥ अब श्रीभगवान् ताश्रोताअर्जुनकूं तिसज्ञेयवस्तुकेअभिमुखकरणेवासतै उत्तमफलकरिकै ताज्ञेयवस्तुकीस्तुतिकरेहै ( यज्ज्ञात्वामृतमश्नुतेइति ) हेअर्जुन जिसवक्ष्यमाणज्ञेयवस्तुकूं जानिकरिकै यहअधिकारीपुरुष अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् इसअनर्थरूपसंसारतै मुक्तहोवै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसज्ञेयवस्तु कूंजानिकै यहअधिकारीपुरुष मुक्तहोवैहै ॥ सोज्ञेयवस्तु कैसाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् ताज्ञेयवस्तुकास्वरूप कथनकरेहै ( परंब्रह्मइति ) हेअर्जुन परं कहिये अतिशयतातैरहित तथा ब्रह्मकहिये देशकालवस्तुपरिच्छेदतैरहित ऐसाजो परमात्मादेवहै सोपरमात्मादेवहीं ज्ञेयरूपहै ॥ अर्थात् इसमुमुक्षुजननै पूर्वउक्तसाधनोंकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ कैसाहैसोपरब्रह्म अनादिमत्है ॥ तहां कारणकानाम आदिहै ॥ अथवा उत्पत्तिकानाम आदिहै ॥ सोआदि जिसवस्तुका होवै ॥ तावस्तुकानाम आदिमत्है ॥ ऐसेआदिमत् देहादिकपदार्थहैं ॥ तिन आदिमत्पदार्थोंतै जो विलक्षणहोवै ॥ अर्थात् कारणतै तथाउत्पत्तितै रहितहोवै ॥ ताकानाम अनादिमत्है ॥ अर्थात् सर्वविकारोंतैविलक्षणवस्तुकानाम अनादिमत्है ॥ और किसीटीकाविषेतों ( अनादिमत्परम् ) यहएकहीपद अंगीकारकरिकै यहअर्थकन्याहै ॥ तहां कार्यकानाम आदिमत्है ॥ और कारणकानाम पर है ॥ ताकार्यकारणदोनोंतै जोअन्यहोवै ताकानाम अनादिमत्परहै ॥ और अन्यकिसी टीकाविषेतों ( अनादि मत्परम् ) याप्रकारके दोपद अंगीकारकरिकै यहअर्थकन्याहै ॥ तहां सोब्रह्मअनादिहै अर्थात् उत्पत्तितै रहितहै ॥ तथा सोब्रह्म मत्परहै अर्थात् मैंसगुणब्रह्मतैपर निर्विशेषरूपहै इति ॥ और अन्यकिसीटीकाविषेतों ( मत्परम् ) इसपदका यह अर्थकन्याहै ॥ मैंभगवान्वासुदेवहूं पराशक्ति जिसकी ता



कानाम मत्परं है ॥ सोयहव्याख्यान समीचीन नहीं है ॥ काहेतैं जिसज्ञेयवस्तुकूं जानिकै यह अधिकारी पुरुष अमृतभाव कूं प्राप्त होवै है ॥ सो ज्ञेयवस्तु मैं तुमारे प्रति कथ  
 न करता हूं ॥ या प्रकार का वचन श्री भगवान् नैं पूर्व कथन कन्या है ॥ सामोक्षकी प्राप्ति निर्विशेष शुद्ध ब्रह्म के ज्ञान तैं ही होवै है ॥ शक्ति वाले सविशेष ब्रह्म के ज्ञान तैं सा  
 मोक्षकी प्राप्ति होवै नहीं ॥ यातैं ईहां श्री भगवान् नैं निर्विशेष ब्रह्म हीं कथन कन्या है ॥ ऐसे निर्विशेष ब्रह्म विषे शक्ति मत्त्व कहणा असंगत है इति ॥ अब श्री भगवान् ता  
 ज्ञेय ब्रह्म की निर्विशेषता कूं कथन करे है ( न सत्तन्नासदुच्यते इति ) तहां जो वस्तु अस्ति इस प्रकार तैं विधि मुख करिकै प्रमाण का विषय होवै है ॥ सो वस्तु सत् इस नाम  
 करिकै कहा जावै है ॥ और जो वस्तु नास्ति इस प्रकार तैं निषेध मुख करिकै प्रमाण का विषय होवै है ॥ सो वस्तु असत् इस नाम करिकै कहा जावै है ॥ और सो ज्ञेय ब्रह्म  
 तों निर्विशेष है तथा स्वप्रकाश चैतन्य स्वरूप है ॥ यातैं सो ब्रह्म सत् असत् दोनों तैं विलक्षण हो गे तैं सत् भी नहीं कहा जावै तथा असत् भी नहीं कहा जावै है ॥ तहां श्रुति  
 ( यतो वाचो निवर्त्तते अप्राप्य मनसा सह ) ॥ अर्थ यह ॥ मन सहित वाणी जिस निर्गुण ब्रह्म कूं प्राप्ति होइ कै जिस निर्गुण ब्रह्म कूं प्राप्त होइ कै जिस निर्गुण ब्रह्म तैं निवृत्त होइ जावै है  
 इति ॥ हे अर्जुन जिस कारण तैं सो ज्ञेय ब्रह्म सत् नहीं है अर्थात् भावत्व धर्म का आश्रय नहीं है ॥ तथा असत् नहीं है अर्थात् अभावत्व धर्म का आश्रय नहीं है ॥ इस कारण तैं सो ज्ञेय  
 ब्रह्म किसी भी शब्द नैं शक्ति रूप मुख्य वृत्तिकरिकै कथन नहीं करता ॥ तात्पर्य यह ॥ जाति गुण क्रिया संबंध यह चारो शब्द की प्रवृत्तिके हेतु होवै हैं ॥ जैसे गौ अश्व इत्यादि कश  
 ब्द तों गोत्व अश्वत्व इत्यादि जातियों कूं लैके आपणे आपणे अर्थ विषे प्रवृत्त होवै हैं ॥ और शुक्ल कृष्ण इत्यादि कशब्द तों शुक्लील इत्यादि गुणों कूं लैके आपणे आपणे  
 अर्थ विषे प्रवृत्त होवै हैं ॥ और पाचक पाठक इत्यादि कशब्द तों पाक पाठ इत्यादि क्रियाओं कूं लैके आपणे आपणे अर्थ विषे प्रवृत्त होवै हैं ॥ और धनी गोमान् इत्यादि  
 कशब्द तों स्वस्वामी भाव आदिक संबंधों कूं लैके आपणे आपणे अर्थ विषे प्रवृत्त होवै हैं ॥ ईहां गुण क्रिया संबंध इन तीनों तैं भिन्न जित नैं की जाती रूप धर्म हैं तथा उपाधि  
 रूप धर्म हैं ते सर्व धर्म जाति शब्द करिकै ग्रहण करणे ॥ तहां ( न सत्तन्नासदुच्यते ) इस वचन करिकै श्री भगवान् नैं तिस ज्ञेय ब्रह्म विषे जातिकानिषेध कथन कन्या है ॥  
 सो जातिकानिषेध गुण क्रिया संबंध इन तीनों के निषेध का भी उपलक्षण है ॥ अर्थात् तिस ज्ञेय ब्रह्म विषे जाति गुण क्रिया संबंध यह चारो नहीं है ॥ तहां ॥ ( एकमेवा  
 द्वितीयम् ) ॥ यह श्रुति ॥ तिस ब्रह्म कूं एक अद्वितीय रूप कहती हुई ता ब्रह्म विषे जातिकानिषेध करे है ॥ काहेतैं अनेक व्यक्तियों विषे रहने हारा जो एक धर्म है ता कूं जातिकहे हैं ॥  
 जैसे अनेक गौ व्यक्तियों विषे रहने हारा जो एक गोत्व धर्म है ता कूं जातिकहे हैं ॥ ऐसी जाति एक अद्वितीय ब्रह्म विषे संभवती नहीं ॥ और ( निर्गुणं निष्क्रियं शांतम् ) यह  
 श्रुति यथाक्रम तैं तिस ब्रह्म विषे गुण क्रिया संबंध इन तीनों कानिषेध करे है ॥ तहां निर्गुणम् इस पद करिकै तों गुणों कानिषेध करे है और निष्क्रियम् इस पद करिकै  
 क्रिया कानिषेध करे है ॥ और शांतम् इस पद करिकै संबंध कानिषेध करे है ॥ और ( असंगो ह्ययं पुरुषः अथात आदेशो नेति नेति ) ॥ यह दोनों श्रुतियां तों तिस ज्ञेय ब्रह्म विषे



सर्वप्रपंचमात्रकानिषेधकरेहैं ॥ ऐसा जातिआदिकसर्वधर्मोंतैरहितसोनिर्गुणब्रह्म किसीभीशब्दनैं कथनकरीतानहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोनिर्गुणब्रह्म जोक दाचित् किसीभीशब्दकरिकै नहींकथनकन्याजावैहै ॥ तौं ( ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामि ) अर्थयह जोज्ञेयवस्तुहै तिसकूं मैतुमारंप्रति कथनकरताहूं ॥ यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ तथा ॥ ( शास्त्रयोनित्वात् ) अर्थयह उपनिषदरूपवेदांतशास्त्रहै योनि क्या प्रमाण जिसविषे ऐसासोब्रह्महै ॥ यहव्यासभगवान्कासूत्रभीकैसे संगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन तिसनिर्गुणब्रह्मकूं उपनिषदरूपशास्त्र जो प्रतिपादनकरेहै ॥ सो शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै प्रतिपादनकरतानहीं ॥ किंतु यथाकथंचित् लक्षणावृत्तिकरिकै सोशब्द तिसनिर्गुणब्रह्मकूं प्रतिपादनकरेहै ॥ सोप्रतिपादनकरणेकाप्रकारतौं द्वितीयअध्यायविषे ( आश्चर्यवत्पश्यतिकश्चिदेनम् ) इसश्लोकविषे विस्तारतैंकथनकरि आयेहैं ॥ यातैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे शब्दकीप्रवृत्तिकेनिषेधकरणेहारे ( नसत्तन्नासदुच्यते ) इसवचनकेसाथि ( ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामि ) इसहमारेवचनका तथा ( शास्त्रयोनित्वात् ) इससूत्रवचनका विरोधहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं ( नसत्तन्नासदुच्यते ) इसवचनका यहअर्थकन्याहै ॥ सोज्ञेयब्रह्म प्रधानपरमाणुआदिकोंकीन्याई सत् इसनामकरिकै कहाजावैनहीं ॥ तथा शून्यकीन्याई असत् इसनामकरिकैभी कहाजावैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ( नासदासीन्नोसदासीत्तदानींनासीद्रजो नो व्योमापरोयदिति ) ॥ अर्थयह ॥ इससृष्टितैंपूर्व शून्यभीनहींहोताभया ॥ तथा त्रिगुणात्मकप्रधानभी नहींहोताभया ॥ तथा परमाणुभी नहींहोतेभये ॥ तथा अव्यक्तभीनहींहोताभया इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे ( नसत्तदुच्यते ) इसवचनकरिकै तिस निरुपाधिकशुद्धब्रह्मविषे सत्शब्दकी तथातासत्शब्दजन्यज्ञानकी अविषयता कथनकरी ॥ ताकहनेकरिकै यहशंकाप्राप्तहुई ॥ तिसज्ञेयब्रह्मकूं जोकदाचित् सत्शब्दका तथातासत्शब्दजन्यज्ञानकाअविषयमानोंगे ॥ तौंसोब्रह्म बंध्यापुत्रशशृंगकीन्याई असत्हींहोवैगा इति ॥ इसप्रकारकीशंकाकूं श्रीभगवान् ( नासदुच्यते ) इसवचनकरिकै सामान्यतैं निवृत्तकरताभया ॥ अब तिसीअसत्पणेकीशंकाकूं विस्तारतैंनिवृत्तकरणेवासतैं श्रीभगवान्सर्वप्राणीयोंकेश्रोत्रादिककरण रूपउपाधिद्वारा चेतनक्षेत्रज्ञरूपताकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मकेअस्तिपणेकूं प्रतिपादनकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) सर्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥ सर्वतःश्रुतिमल्लोकेसर्वमावृत्यतिष्ठति ॥ १३ ॥ सर्वतःपाणिपादं । तत् । सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् । सर्वतःश्रुतिमत् । लोके । सर्वम् । आवृत्य । तिष्ठति ॥ १३ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्मकैसाहै सर्वदेहोंविषेहंहस्तपादजिसके तथासर्वदेहोंविषेहेंनेत्रशिरमुखजिसके तथासर्वदेहोंविषे श्रवणइंद्रियवालाहै तथासर्वप्राणीयोंकेशरीर विषेसर्वअचेतनवर्गकूं व्याप्यकरिकै स्थितहै ॥ १३ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥



॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वहमनै कथनकरचाजो ज्ञेयब्रह्म है ॥ सोज्ञेयब्रह्म कैसा है ॥ सर्वतःपाणिपाद है ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जे अचेतनरूप पाणिहैं तथा पादहैं ॥ तेअचेतनरूप सर्वपाणिपाद आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचेतनरूपक्षेत्रज्ञाननै ॥ ताचेतनकानाम सर्वतःपाणिपाद है ॥ तहां लोकविषे जितनीकी अचेतनपदार्थोंकी प्रवृत्तियांहैं ॥ तेसर्वप्रवृत्तियां चेतनरूपअधिष्ठानपूर्वकहींहोवैहैं ॥ चेतनरूपअधिष्ठानतैविना जडपदार्थोंकीप्रवृत्तिकहांभीदेखनेविषे आवतीनहीं ॥ जैसे रथादिकजडपदार्थोंकीप्रवृत्ति चेतनपुरुषपूर्वकहींहोवैहै ॥ तैसे हस्तपादादिकसर्वजडपदार्थोंकीप्रवृत्तियांभी चेतनब्रह्मपूर्वकहींहोवैहैं ॥ ऐसे हस्तपादादिकसर्वजडवर्गकेप्रवर्तक चेतनक्षेत्रज्ञरूपब्रह्मविषे नास्तिपणेकीशंका कदाचित्भी संभवतीनहीं इति ॥ याप्रकारकीयुक्ति ( सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ) इत्यादिकसर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी ॥ ईहां पाणिपाद इनदोइंद्रियोंकाग्रहण वाकादिकसर्वकर्मइंद्रियोंका उपलक्षण है ॥ पुनः कैसाहैसोज्ञेयब्रह्म सर्वतोक्षिशिरो मुख है ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जितनैकी अक्षिहैं तथाशिरहैं तथामुखहैं ॥ तेसर्व अक्षिशिरमुख आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचेतन्यनै ताकानाम सर्वतोक्षिशिरोमुख है ॥ पुनः कैसाहैसोपरब्रह्म सर्वतःश्रुतिमत् है ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जितनैकी श्रवणइंद्रियहैं ॥ तेसर्वश्रवणइंद्रिय आपणे आपणे व्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचेतन्यनै ताकानाम सर्वतःश्रुतिमत् है ॥ ईहां अक्षि श्रोत्र इनदोनोंइंद्रियोंकाग्रहण सर्वज्ञानइंद्रियोंका तथामनबुद्धिआदिकोंका उपलक्षण है ॥ पुनः कैसाहै सोपरब्रह्म ॥ सर्वदेहोंविषे सोएकहीं नित्यविभुचेतन सर्वजडवर्गकूं अध्यासिकसंबंधकारिकै आपणेसत्तास्फूर्तिरूपतैव्याप्यकरिकै स्थितहुआहै अर्थात् निर्विकारस्थितिकूंहीं प्राप्तहुआहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठान आपणेविषेकल्पित सर्पादिकोंके गुणकरिकै तथादोषकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे आपणेविषे अध्यस्तजडप्रपंचके दोषकरिकै तथागुणकरिकै सोचेतन देवलेशमात्रतैभी बंधायमानहोवैनहीं इति ॥ तहां सर्वदेहोंविषे एकहींचेतनहै सोचेतन नित्यहै तथाविभूहै ॥ देहदेहविषे भिन्नभिन्नचेतनहैनहीं ॥ यहसर्ववार्ता पूर्वविस्तारतैप्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ तहां इसश्लोककरिकै श्रीभगवान् नै यहदोअनुमान सूचनकरे ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथामनबुद्धिआदिक चतुष्टयअंतःकरण यहसर्व चेतनशक्तिनिमित्त कस्वस्वव्यापारवालेहैं स्वभावतैजडहोणेतै चर्ममयअथवाकाष्ठमयप्रतिमादिकोंकीन्याई इति ॥ तथा देहइंद्रियादिकसर्व स्वभावतैजडहैं दूसरेचेतनअधिष्ठाताकी बुद्धिपूर्वकप्रवृत्तिवालेहोणेतै रथादिकोंकीन्याई इति ॥ इसप्रकारतै सर्वप्राणीयोंकेदेहइंद्रियादिकउपाधियोंकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका अस्तिपणानिश्चयकन्याजावैहै इति ॥ १३ ॥ \* ॥ तहां ॥ ( अध्यारोपापवादाभ्यानिःप्रपंचप्रपंच्यते ॥ ) अर्थयह ॥ शुद्धब्रह्मविषे प्रथमइससर्वप्रपंचका अध्यारोपकरिकै तिसतैअनंतर तिससर्वप्रपंचका निषेधरूपअपवादकरिकै सोशुद्धब्रह्म श्रुति भगवतीनै तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनै अधिकारीशिष्योंकेप्रति आत्मारूपकरिकै प्रतिपादनकरीताहैइति ॥



इसवृद्धपुरुषोंकेन्यायकूँअनुसरणकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकाअध्यारोपकरिकै ( अनादिमत्परब्रह्म ) इसपूर्वउक्तवचनका पूर्वलेखलोकविषे व्याख्यानकन्या ॥ अब तिसअध्यारोपितसर्वप्रपंचका अपवादकरिकै ( नसत्तन्नासदुच्यते ) इसपूर्वउक्तवचनकेव्याख्यानकरणेअर्थ श्रीभगवान् आरंभकरैहै ॥ अधिकारीजनौकेप्रति निरुपाधिकस्वरूपकेजनावणेवासतै ॥

( मू० श्लो० ) सर्वेन्द्रियगुणाभासंसर्वेन्द्रियविवर्जितम् ॥ असत्तंसर्वभृच्चैवनिर्गुणंगुणभोक्तृच ॥ १४ ॥ सर्वेन्द्रियगुणाभासम् । सर्वेन्द्रियविवर्जितम् । असत्तम् । सर्वभृत् । च । एव । निर्गुणम् । गुणभोक्तृ । च ॥ १४ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म सर्वेन्द्रियोंतैरहितहै तथा सर्वेन्द्रियोंकेव्यापारकरिकैभासमानहै तथासर्वसंबंधतैरहितहै तथा सर्वेकेधारणकरणेहाराहीहै तथासत्त्वादिकगुणोंतैरहितहै तथा तिनंसत्त्वादिकगुणोंकाभोक्ताहै ॥ १४ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयपरब्रह्म परमार्थतैतौ श्रोत्रादिकसर्वेन्द्रियोंतैरहितहै ॥ तथा आपणीमायाकरिकै सर्वेन्द्रियोंकेगुणोंकरिकैभासमानहै ॥ तहां बाह्यकरणरूप जेश्रोत्रवाकादिकदशेन्द्रियहैं ॥ तथा अंतःकरणरूपजोमनबुद्धिहैं ॥ तिनसर्वेन्द्रियोंकेजेगुणहैं ॥ अर्थात् श्रवण वचन संकल्प निश्चय इत्यादिकजेव्यापारहैं ॥ तिनसर्वेन्द्रियोंकेगुणोंकरिकै सोज्ञेयब्रह्म भासमानहोवैहै ॥ अर्थात् सोपरब्रह्म तिनसर्वेन्द्रियोंकेव्यापारकरिकै व्यापारवालेकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( ध्यायतीवलेलायतीव ) ॥ अर्थयह ॥ बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैं यहआत्मादेन ध्यानकरताकीन्याई तथाचलायमानहुएकीन्याई प्रतीतहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिविषे ध्यायति इसशब्दकरिकै कथनकन्याजोध्यानहै सोध्यान सबज्ञानेन्द्रियोंकेव्यापारोंका उपलक्षणहै ॥ और लेलायति इसशब्दकरिकै कथनकन्याजो चलनरूपलेलायनहै ॥ सोलेलायन सर्वकर्मइन्द्रियोंकेव्यापारोंका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् तिनइन्द्रियोंकेतादात्म्य अध्यासतैं यहआत्मादेवमें देखेताहूं मैं श्रवणकरताहूं मैंबोलताहूं मैं चलताहूं इसप्रकारतैं तिसतिसइन्द्रियकेव्यापारविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ और वास्तवतैं तिनसर्वेन्द्रियोंतैरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( पश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः । अपाणिपादोजवनोगृहीता ) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव वास्तवतैं चक्षुतैरहितहुआभी देखेहै ॥ तथा वास्तवतैं श्रोत्रेन्द्रियतैरहितहुआभी शब्दकूंश्रवणकरेहैं ॥ तथा वास्तवतैं हस्तइन्द्रियतैरहितहुआभी वस्तुकूंग्रहणकरेहै ॥ तथा वास्तवतैं पादइन्द्रियतैरहितहुआभी शीघ्रगमनवालाहै ॥ इति ॥ पुनःकैसाहैसोपरब्रह्म ॥ परमार्थतैतौ सर्वसंबंधोंतैरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिसज्जते ) ॥ अर्थयह ॥ यहपरमात्मापुरुष सर्वसंगतैरहितहोणेतैं असंगहै ॥ तथा यहअसंगआत्मादेव किसीभीपदार्थकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ इसप्रकार परमार्थतैं असंगहुआभी सोपरब्रह्म



आपणीमायाशक्तिकारिके सर्वभूतहै ॥ तहां लोकविषे अधिष्ठानतैंविना कोईभीभ्रमहोतानहीं ॥ किंतु रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानविषेहीं सर्परजतादिकोंकाभ्रम होवैहै ॥ यातैं जोचैतन्य आपणेसत्वरूपकरिके सर्वकल्पितप्रपंचकूंधारणकरैहै तथापोषणकरैहै ताकानाम सर्वभूतहै ॥ पुनःकैसाहैसोज्ञेयब्रह्म निर्गुणहै ॥ अर्थात् परमार्थतैंतों सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा गुणोंकाभोक्ताहै ॥ अर्थात् शब्दस्पर्शादिकविषयद्वारा सुख दुःख मोहके आकारकरिकेपरिणामकूं प्राप्तहुएजे सत्त्व रज तम यहतीनगुणहैंतिनगुणोंकाभोक्ताहै तथाउपलब्धहैं ॥ तहांश्रुति ॥ ( साक्षीचेताकेवलनिर्गुणश्च ॥ ) अर्थयह ॥ यहपरमात्मादेव सर्वका साक्षीहै तथाचेतनहै तथाअद्वितीयहै तथासत्त्वादिकसर्वगुणोंतैंरहितहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

( मू०श्लोक ) बहिरंतश्च भूतानामचरंचरमेवच ॥ सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयंदूरस्थंचांतिकेचतत् ॥ १५ ॥ बहिः । अंतः । च । भूतानाम् । अचरं । चरम् । एव । च । सूक्ष्मत्वात् । तत् । अविज्ञेयं । दूरस्थं । च । अंतिके । च । तत् ॥ १५ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म हों सर्वभूतोंके बाह्यहै तथा अंतरहै तथा स्थावररूपहै तथाजंगमरूपहै तथासूक्ष्महोणेतैं अविज्ञेयहै तथा सोज्ञेयब्रह्म अत्यंतदूरस्थितहै तथा अत्यंतसमीपहै ॥ १५ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनःकैसाहै सोज्ञेयब्रह्म ॥ उत्पत्तिधर्मवाले जितनैंकी कल्पितकार्यहैं ॥ तिनसर्वकल्पितकार्योंके बाह्य तथाअंतर सोएकहीं अकल्पितअधिष्ठानरूपब्रह्मव्यापकहै ॥ अर्थात् जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधारा आदिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंके बाह्य तथाअंतर सोरज्जुरूपअधिष्ठानहीं व्यापकहोवैहै ॥ तैसे तिनसर्वभूतोंके बाह्य तथाअंतर सोअधिष्ठानरूपब्रह्महीं सर्वप्रकारकरिके व्यापकहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( तदंतरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्य बाह्यतः ॥ ) अर्थयह ॥ सोअधिष्ठानरूप परब्रह्महींइससर्वप्रपंचके अंतर तथाबाह्य व्यापकहै इति ॥ सर्वत्रव्यापकहोणेतैं सोपरब्रह्महीं सर्वस्थावरभूतरूपहै तथा सर्वजंगमभूतरूपहै ॥ कोहैतैं इसलोकविषे जोजोकल्पितपदार्थहोवैहै ॥ सो अधिष्ठानतैंभिन्नसत्तावालाहोवैनहीं ॥ किंतु सोकल्पितपदार्थ अधिष्ठानरूपहींहोवैहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्पादिक अधिष्ठानरज्जुरूपहींहै तैसे अधिष्ठानब्रह्मविषेकल्पित यहस्थावरजंगमरूपजगत्भी तिसअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्नसत्तावालानहींहै ॥ किंतुताअधिष्ठानब्रह्मरूपहींहै ॥ यातैं इनस्थावरजंगमपदार्थोंकूं अधिष्ठानब्रह्मरूपता युक्तहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( सर्वह्येतद्ब्रह्म ॥ ) अर्थयह ॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं सोज्ञेयब्रह्म जो सर्वकाआत्मारूपहै ॥ तों सर्वप्राणी तिसपरब्रह्मकूं स्पष्टकरिकेक्युं नहींजानते ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेनजानणेविषेहेतुकहेहै ( सूक्ष्मत्वानदविज्ञेयमिति ) हेअर्जुन सोपरब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहुआभी अत्यंतसूक्ष्महोणेतैं तथारूपादिकगु



णोंतैरहितहोणेतें अविज्ञेयहै ॥ अर्थात् यहब्रह्म इसीप्रकारकाहीहै ॥ याप्रकारतैं स्पष्टज्ञानकेयोग्यहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ( सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरानित्यम् ॥ )  
 अर्थयह ॥ सोपरब्रह्म आकाशादिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै तथानित्यहै इति ॥ इसीकारणतैंहीं सोपरब्रह्म विवेकवैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितपुरुषोंकूं  
 सहस्रकोटीवर्षोंकरिकैंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं सोपरब्रह्म तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं दूरस्थहै ॥ अर्थात् लक्षकोटीयोजनमार्गकेअंतरायवालेदेशकीन्यांई अत्यंत  
 दूरहै ॥ और जेपुरुष तिनविवेकवैराग्यादिकसाधनोंकरिकैंसंपन्नहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं सोपरब्रह्म आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंत समीपहै ॥ तहांश्रुति ( दूरात्सुदूरे  
 तदिहांतिकेचपश्यत्स्विहैवनिहितंगुहायाम् ) अर्थयह ॥ जेपुरुष विवेकवैराग्यादिकसाधननोंतैंरहितहैं ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषोंकूंतां यहपरमात्मादेव अत्यंत  
 दूरलोकालोकपर्वततैंभी अत्यंतदूरहै ॥ और जेपुरुष विवेकवैराग्यादिकसाधनसंपन्नहोइकैं ब्रह्मवेत्तागुरुकेशरणकूप्राप्तहुएहैं ॥ ऐसे उत्तमअधिकारीपुरुषोंकूं  
 सोपरब्रह्म अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेहीं साक्षात्कारहोवैहै इति ॥ १५ ॥ \* ॥ तहांपूर्व त्रयोदशेश्लोकविषे ( सर्वमावृत्यतिष्ठति ) इसवचनकरिकैं एक  
 हीपरमात्मादेव सर्वजडवर्गकूंव्याप्तकरिकैंस्थितहुआहै यहअर्थ सामान्यतैं कथनकन्याथा ॥ अब तिसअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैंवर्णनकरेहै ॥ देहदेहविषे आ  
 त्माकेभेदमानणेहारेवादीयोकेखंडनकरणेवासतै ॥

( मू० श्लो० ) अविभक्तंचभूतेषुविभक्तमिवचस्थितम् ॥ भूतभर्तृचतज्ज्ञेयंग्रसिष्णुप्रभविष्णुच ॥ १६ ॥ अविभक्तं । च । भूतेषु ।  
 विभक्तम् । ईव । च । स्थितं । भूतभर्तृ । च । तत् । ज्ञेयं । ग्रसिष्णु । प्रभविष्णु । च ॥ १६ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन पुनः  
 सोपरब्रह्म सर्वप्राणीयोविषे एकहीहै तथा भिन्नहुएकी न्यांई स्थितहै सोपरब्रह्महीं सर्वभूतोंकाधारणकरणेहारा तथा संहारकरणेहारा  
 तथा उत्पन्नकरणेहारातुमनैं जानणा ॥ १६ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोपरब्रह्म सर्वप्राणीयोविषे एकहीव्यापकहै ॥ देहदेहविषे भिन्नभिन्नहैनहीं ॥ जिसकारणतैं सो परब्रह्म आकाशकीन्यांई सर्वव्यापकहै ॥  
 ॥ तहांश्रुति ॥ ( एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः ) ॥ अर्थयह ॥ जैसे सर्वकाष्ठोंविषे अग्नि गुह्यहोइकैरह्याहै ॥ तैसे सोएकहीपरमात्मादेव सर्वभूतोंविषे गुह्यहोइकै  
 रह्याहै इति ॥ इसप्रकार वास्तवतैं एकअद्वितीयरूपहुआभी सोपरब्रह्म इनदेहोंकेसाथि तादात्म्यकरिकैंप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म देहदेहविषे भिन्नभिन्न  
 हुएकीन्यांई स्थितहै ॥ अर्थात् जैसे एकहीआकाशविषे घटमठादिकउपाधियोंकरिकैं मिथ्याभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोमिथ्याभेद वास्तवतैंआकाशकीएकताकूं  
 निवृत्तकरिसकैनहीं ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेवविषे देहादिकउपाधियोंकरिकैं मिथ्याभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोमिथ्याभेद तिसपरमात्मादेवकीवास्तवएकताकूं निवृत्त



करिसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं सोक्षेत्रज्ञचेतन सर्वभूतोंविषेव्यापकहोवो ॥ परंतु सर्वजगत्काकारणजोब्रह्महै सोकारणब्रह्मतों ताक्षेत्रज्ञचेतनतैं भिन्नहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै ( भूतभर्तृचइति ) हेअर्जुन सोब्रह्मभूतभर्तृहै ॥ अर्थात् जोब्रह्म स्थितिकालविषे अधिष्ठानतारूप करिकै सर्वभूतोंका धारणकरैहै तथापोषणकरैहै ॥ तथा जोब्रह्म प्रलयकालविषे तिनसर्वभूतोंकासंहारकरैहै ॥ तथा जोब्रह्म सृष्टिकालविषे तिनसर्वभूतोंकूं उत्पन्न करैहै ॥ जैसे रज्जुआदिकअधिष्ठान मायाकल्पितसर्पादिकोंके उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोवैहैं ॥ तैसे इससर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणरूपजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्महीं सर्वदेहोंविषेएकक्षेत्रज्ञरूप तुमनैं जानणा ॥ तिसब्रह्मतैं सोक्षेत्रज्ञचेतन भिन्ननहींजानणा इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वत्रविद्यमान हुआभी सोज्ञेयब्रह्म जवीनहींप्रतीतहोवैहै ॥ तबी सोज्ञेयब्रह्म जडहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ सोज्ञेयब्रह्म नहींप्रतीतहोणेमात्रकरिकै जडहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोपरब्रह्म यद्यपि स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथापि सोपरब्रह्म रूपादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मविषे नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकीअविषयता संभवहोइ सकेहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कहैहै ( ज्योतिषामपितज्ज्योतिःइति ) अथवा पूर्वश्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलय कर्तृत्वरूपतटस्थलक्षण कथनकन्याथा ॥ अब ( ज्योतिषामपितज्ज्योतिः ) इसश्लोककरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका स्वरूपलक्षण कथनकरैहैं ॥

( मू० श्लो० ) ज्योतिषामपितज्ज्योतिस्तमसःपरमुच्यते ॥ ज्ञानंज्ञेयंज्ञानगम्यंहृदिसर्वस्यधिष्ठितम् ॥ १७ ॥ ज्योतिषाम् । अपि । तत् । ज्योतिः । तमसः । परम् । उच्यते । ज्ञानम् । ज्ञेयम् । ज्ञानगम्यम् । हृदि । सर्वस्य । धिष्ठितम् ॥ १७ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म सूर्यादिकज्योतियोंका भी ज्योतिहै तथाजडवर्गरूपतैं पर कहाँहै तथाज्ञानरूपहै तथाज्ञेयरूपहै तथाज्ञान करिकैप्राप्यहै तथासर्वप्राणीयोंके बुद्धिविषे स्थितहै ॥ १७ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनः सोज्ञेयब्रह्मकैसाहै ॥ ज्योतियोंकाभीज्योतिहै ॥ अर्थात् अनात्मपदार्थोंकूंप्रकाशकरणेहारे जो आदित्य चंद्रमा अग्नि विद्युत् इत्यादिक बाह्यज्योतिहैं तथामनबुद्धिआदिक अंतरज्योतिहैं ॥ तिनसर्वज्योतियोंकाभी सोपरब्रह्म प्रकाशकरणेहाराहै ॥ तहां चैतन्यज्योतिविषे सूर्यादिकजडज्योतियोंका प्रकाशकपणा युक्तिकरिकैभी संभवहोइसकेहै ॥ तथाइसअर्थकूं साक्षात्श्रुतिभगवतीभी कथनकरैहै ॥ तहांश्रुति ( येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धः । तस्यभासासर्वमिदं विभाति ) ॥ अर्थयह ॥ जिसस्वयंज्योतिपरमात्मादेवकरिकै यहतेजयुक्तसूर्य तपायमानहोवैहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवकेप्रकाशकरिकै यहसूर्यचंद्रादिकसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै इति ॥ तथा यहवार्ता श्रीभगवान् आपहीं ( यदादित्यगततेजः ) इत्यादिकवचनकरिकैकथनकरैगा ॥ यातैं चैतन्यब्रह्मरूपज्योतिकरिकै सूर्यादिकजड



ज्योतियोंका प्रकाश संभव है इति ॥ शंका ॥ हे भगवन् सोचैतन्यस्वरूपब्रह्म स्वभावतैर्जडपणेतैरहित हुआ भी जडपदार्थोंके साथ संबंधवाला होवेंगा ॥ ऐसी अर्जुन की शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे है ( तमसः परमुच्यते इति ) हे अर्जुन सोपरब्रह्म जडवर्गरूपतमै परकह्या है ॥ अर्थात् अविद्या तथा ता अविद्याका कार्यरूप यह सर्वप्रपंच यह दोनों अपारमार्थिक हैं ॥ और सोचैतन्यरूपज्ञेयब्रह्म पारमार्थिक है ॥ ता असत् जगत्का तथा सत्ब्रह्मका कोई भी संबंध संभवतानहीं ॥ यातै श्रुतिभगवतीनै तथा ब्रह्मवेत्ता पुरुषोंनै सोज्ञेयब्रह्म अविद्याके तथा ताके कार्यरूपप्रपंचके संबंधतैरहित कथनकन्या है ॥ तहां श्रुति ॥ ( अक्षरात्परतः परः । आदित्यवर्णतमसः परस्तात् ) ॥ अर्थ यह ॥ आत्मज्ञानतै विना अन्य उपाय करिकै नही नाश होनेहारी तथा आपणे कार्यकी अपेक्षा करिकै पर ऐसी जा अविद्या है तिस अविद्यातै भी सोपरब्रह्म पर है ॥ तथा सोपरब्रह्म सूर्यकीन्याई दूसरे प्रकाशककी नही अपेक्षा करता हुआ सर्वप्रपंचका प्रकाश करे है ॥ तथा अविद्यारूपतमै पर है इति ॥ यह वार्ता ब्रह्मवेत्ता पुरुषोंनै भी कथन करी है ॥ तहां श्लोक ॥ ( निःसंगस्यैव संगेन कूटस्थस्य विकारिणा ॥ आत्मनोऽनात्मना योगो वास्तवो नोपपद्यते ) ॥ अर्थ यह ॥ सर्वसंगतैरहित कूटस्थ आत्माका संगवान् विकारी अनात्मवस्तुके साथ वास्तवसंबंध संभवतानहीं इति ॥ अथवा ( तमसः परमुच्यते ) इस वचन करिकै श्रीभगवान् नै तिस ज्ञेयब्रह्मविषे जडवर्गरूप तमै भिन्नपणा कथनकन्या है ॥ ता भिन्नपणे की सिद्धि करने वासतै तिस ज्ञेयब्रह्मका ( ज्योतिषामपित ज्योतिः ) इस वचन करिकै हेतुगर्भित विशेषण कथनकन्या है ॥ ता करिकै यह अनुमान सिद्ध होवै है ॥ सोज्ञेयब्रह्म तिस जडवर्गरूपतमै भिन्न होने कूं योग्य है ज्योतियोंका भी ज्योतिरूप होनेतै जो पदार्थ जडवर्गतै भिन्न नही होवै है सो पदार्थ ज्योतियोंका ज्योतिरूप भी नही होवै है जैसे घटादिक जडपदार्थ हैं इति ॥ जिस कारणतै सोज्ञेयब्रह्म स्वयं ज्योतिरूप है तथा सर्वजडपदार्थोंके संबंधतैरहित है ॥ तिस कारणतै सोज्ञेयब्रह्म ज्ञानरूप है ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हे भगवन् जैसे चंद्ररूप ज्योतिका प्रकाश करनेहारा तथा भौतिकत्वरूप करिकै ता चंद्रके सजातीय सूर्यरूप ज्योति है यह वार्ता ज्योतिषशास्त्रविषे प्रसिद्ध है ॥ तैसे तिन सूर्यादिक ज्योतियोंका प्रकाश करनेहारा तथा तिन सूर्यादिकोंके सजातीय कोई अलौकिक ज्योति होवेंगा ॥ ऐसी अर्जुन की शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे है ( ज्ञानमिति ) हे अर्जुन सो सूर्यादिक ज्योतियोंका प्रकाश करनेहारा ज्ञेयब्रह्म कैसा है ज्ञानरूप है ॥ अर्थात् प्रमाणजन्य चित्तवृत्ति करिकै अभिव्यक्त संवित् रूप है ॥ कोई अलौकिक भौतिक ज्योति नही है ॥ ऐसा ज्ञानरूप होनेतै ही सोपरब्रह्म ज्ञेयरूप है ॥ अर्थात् अज्ञात होनेतै सोपरब्रह्म अधिकारीजनोंनै जानने कूं योग्य है ॥ ता ज्ञानरूपब्रह्मतै भिन्न जडपदार्थोंविषे सो अज्ञातपणा रहै नही ॥ यातै ते जडपदार्थ जानने योग्य नही हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् ऐसा ज्ञेयब्रह्म इन सर्व प्राणीयोंनै किस वासतै नही जानीता है ॥ ऐसी अर्जुन की शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे है ( ज्ञानगम्यमिति ) हे अर्जुन पूर्व अमानित्वतै आदितैके तत्त्व ज्ञानार्थ दर्शनपर्यंत कथनकन्येजे वीस साधन हैं ॥ जे साधन ज्ञानके हेतु होनेतै ज्ञानशब्द करिकै कथनकन्ये हैं ॥ ऐसे ज्ञानरूप साधनोंकरिकै ही सोज्ञेयब्रह्म प्राप्त



होवैहै ॥ तिनसाधनोंतैविना प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं अमानित्वादिकसाधनसंपन्न पुरुषहीं तिसज्ञेयब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिनसाधनोंतैरहित बहिर्मुखपुरुष तिसज्ञेयब्रह्मकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् यज्ञादिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य स्वर्गादिक जैसे देशकालकरिकै व्यवहितहोवैहैं ॥ तैसे अमानित्वा दिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य सोज्ञेयब्रह्मभी देशकालकरिकैव्यवहितहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ( हृदिसर्वस्यधिष्ठितमिति ) हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म स्वर्गादिकोंकीन्यांई कोईव्यवहितनहींहै ॥ किंतु सर्वप्राणीयोंकीबुद्धिविषेहीं स्थितहै ॥ अर्थात् सोज्ञेयब्रह्म सामान्यतैं सर्वप्रपंचविषेस्थितहुआभी विशेषरूपकरिकै तिसबुद्धिविषेहीं जीवरूपकरिकै तथाअंतर्यामीरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे सामान्यतैंसर्वपदार्थोंविषेस्थितहुआभी सूर्यकातेज दर्पणसूर्यकांतमणि इत्यादिकस्वच्छपदार्थोंविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्विषे सामान्यरूपतैंस्थितहुआभी सोपरब्रह्म ताबुद्धिविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपरब्रह्म सर्वप्राणीयोंका आपणाआत्मारूपहोणेतैं वास्तवतैंअत्यंत अव्यवहितहुआभी भांतिकरिकै व्यवहितकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ सोईहींज्ञेयब्रह्म तत्त्वज्ञानकरिकै सर्वभ्रमकेकारणरूपअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवैहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वकथनकन्येहुएक्षेत्रादिकोंकूं तथाअधिकारीकूं तथाफलकूं कथनकरताहुआ श्रीभगवान् इसपूर्वप्रसंगका उपसंहारकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) इतिक्षेत्रं तथाज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ॥ मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावा योपपद्यते ॥ १८ ॥ इति । क्षेत्रं । तथा । ज्ञानं । ज्ञेयं । च । उक्तं । समासतः । मद्भक्तः । एतत् । विज्ञाय । मद्भावाय । उपपद्यते ॥ १८ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनैं तुमारेतांई ईसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै क्षेत्रं तथा ज्ञानं तथा ज्ञेयं संक्षेपकरिकै कथनकन्या मेराभक्त ईनक्षेत्रादिकतीनोंकूं जानि करिकै मेरेभावकीप्राप्तिवासतै योग्यहोवैहै ॥ १८ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरनैं तुमारेतांई महाभूतोंतैंआदिलैकेधृतिपर्यंत क्षेत्रकास्वरूप संक्षेपतैं कथनकन्या ॥ तथा अमानित्वतैंआदिलैके तत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत ज्ञानभी संक्षेपतैंकथनकन्या ॥ तथा ( अनादिमत्परंब्रह्म ) इसवचनतैंआदिलैके ( हृदिसर्वस्यधिष्ठितम् ) इसवचनपर्यंत ज्ञेयब्रह्मभी संक्षेपतैं कथनकन्या ॥ अर्थात् जेक्षेत्र ज्ञान ज्ञेय यहतीनों श्रुतिस्मृतियोंविषे अत्यंतविस्तारतैं कथनकन्येहैं ॥ तेतीनों तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंतैंआकर्षणकरिकै मंदबुद्धि पुरुषोंकेअनुग्रहवासतैं मैंपरमेश्वरनैं संक्षेपकरिकै तुमारेतांई कथनकरचेहैं ॥ इतनाहीं सर्ववेदोंकाअर्थहै तथाइसगीताशास्त्रकाअर्थहै इति ॥ तहां इसअर्थविषे पूर्व द्वादशेअध्यायविषेकथनकन्येहैंलक्षणजिसके ऐसाजो मैंपरमेश्वरकाभक्तहै सोमेराभक्तहीं अधिकारीहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ( मद्भक्तः इति ) अर्थात्



रूपमगुरुरूप मैं भगवान् वासुदेवविषे समर्पणकर्येहैं सर्वकर्मजिसनैं तथा एकमैं परमेश्वरकेहीं शरणकूं प्राप्तहुआ जोमैं परमेश्वरका भक्तहै ॥ सोमेरा भक्तहीं इन पूर्वउक्त क्षेत्र ज्ञान ज्ञेय तीनोंकूं भलीप्रकारतैं जानिकै मेरेभावकी प्राप्ति वासतै योग्यहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वअनर्थोंतैं रहित परमानंदब्रह्मभावरूपमोक्षकी प्राप्ति वासतै योग्यहोवैहै ॥ तहां परमेश्वरकी भक्तिकरि कैहीं इस अधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मभावकी प्राप्ति होवैहै यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहां श्रुति ॥ ( यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ॥ तस्यै ते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशं ते महात्मनः ॥ ) अर्थ यह ॥ जिस अधिकारीपुरुषकी परमात्मा देवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ और जैसी परमात्मा देवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तैसीहीं ब्रह्मवेत्ता गुरुविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकूंहीं यहवेदांतप्रतिपादितअर्थ हृदयविषे प्रकाशमानहोवैहैं इति ॥ और यह अधिकारी पुरुष ज्ञेयब्रह्मकूं आपणा आत्मारूपजानिकै ब्रह्मरूपहोवैहै ॥ यहवार्ताभी श्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ तहां श्रुति ॥ ( ब्रह्मवेदब्रह्मैव भवति ) ॥ अर्थ यह ॥ यह अधिकारीपुरुष मैं ब्रह्मरूपहूं ॥ याप्रकारतैं ब्रह्मकूं आपणा आत्मारूपजानिकै ब्रह्मरूपहीं होवैहै इति ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ परमपुरुषार्थके प्राप्तिकी इच्छावान् यह अधिकारीपुरुष अत्यंततुच्छविषयभोगोंकी इच्छाका परित्यागकरिकै सर्वकालविषे एकमैं परमेश्वरकेशरणहुआ आत्मज्ञानके अमानित्वादिकसाधनोंकूंहीं प्रयत्नतैं संपादनकरै इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ तहां इस पूर्वउक्तग्रंथकरिकै ( तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च ) इसवचनका व्याख्यानकन्या ॥ अब ( यद्विकारियतश्च यत् सच यो यत्प्रभावश्च ) इसवचनका व्याख्यानकरणा प्राप्तभया ॥ तहां प्रकृतिपुरुष इनदोनोंकूं संसारकाहेतुपणा कथनकरिकै ( यद्विकारियतश्च यत् ) इसवचनका अर्थ ( प्रकृतिपुरुषंचैव ) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै विस्तारतैं कथनकरैहैं ॥ और ( सच यो यत्प्रभावश्च ) इसवचनका अर्थतों ( पुरुषः प्रकृतिस्थो हि ) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै विस्तारतैं कथनकरैगें ॥ तहां पूर्वसप्तमअध्यायविषे क्षेत्रनामा अपराप्रकृति तथा क्षेत्रज्ञजीवनामा पराप्रकृति इनदोनोंप्रकृतियोंकूं कथनकरिकै ( एतयोनी निभूतानि ) इसवचनकरिकै तिनदोनोंप्रकृतियोंविषे सर्वभूतोंकी कारणता कथनकरीथी ॥ अब तिनदोनोंप्रकृतियोंविषे अनादिपणा कथनकरिकै सर्वभूतोंविषे तिनदोनोंप्रकृतियोंके कार्यपणेकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

( मू० श्लो० ) प्रकृतिपुरुषंचैव विद्व्यनादी उभावापि ॥ विकारांश्च गुणांश्चैव विद्वि प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥ प्रकृतिम् । पुरुषम् । चं । एव । विद्वि । अनादी । उभौ । अपि । विकारान् । चं । गुणान् । चं । एव । विद्वि । प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥ ( इति पदच्छेदः ) ॥ हे अर्जुन प्रकृतिकूं तथा पुरुषकूं दोनोंकूं भी तूं अनादिहीं जान तथा विकारोंकूं तथा गुणोंकूं तों प्रकृति तैं उत्पन्नहुआ हीं तूं जान ॥ १९ ॥ ( इति पदार्थः ) ॥



॥ टीका ॥ हेअर्जुन माया अज्ञान अविद्या यहहैनाम जिसके ऐसीजा त्रिगुणात्मिका परमेश्वरकीशक्तिहै ॥ जामायाशक्ति पूर्वसप्तमअध्यायविषे अष्टप्रकारकी कथनकरीथी ॥ तथा अपराप्रकृति इसनामकरिकैकथनकरीथी ॥ साक्षेत्रनामा अपराप्रकृति ईहां प्रकृतिशब्दकरिकैग्रहणकरणी ॥ और पूर्वसप्तमअध्यायविषे जा क्षेत्रज्ञरूपजीवनामा पराप्रकृति कथनकरीथी ॥ साजीवनामा पराप्रकृतिहीं ईहां पुरुषशब्दकरिकैग्रहणकरणी ॥ ऐसे प्रकृति पुरुष दोनोंकूंभी तूं अनादिहीं जान ॥ तहां नहीं विद्यमानहै आदि क्या कारण जिसका ताकानाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादिरूप तिनदोनोंकूं तूं जान ॥ तहां ( मायांतुप्रकृतिविद्यात् ) इस श्रुतिनै तिसमायारूपप्रकृतिकूंहीं सर्वजगत्काकारणकह्याहै ॥ ऐसी सर्वजगत्केकारणरूपप्रकृतिविषे सोअनादिपणा युक्तहै ॥ काहेतैं जोकदाचित् तिसमायानामा प्रकृतिकूंभी अन्यकिसीकारणकीअपेक्षा मानिये ॥ तौ तिसप्रकृतिकेकारणकूंभी किसीअन्यकारणकीअपेक्षाहोवैंगी तिसअन्यकारणकूंभी किसीअन्यकारणकी अपेक्षा होवैंगी इसप्रकारतैं कारणोंकीअनवस्था प्राप्तहोवैंगी ॥ यातैं तामायारूपप्रकृतिविषे सोअनादिपणाहीं मानणेयोग्यहै ॥ किंवा तिसमायारूपप्रकृतिविषे केवलयुक्तिकरिकैहीं सोअनादिपणा नहीं ॥ किंतु ( अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां ) यहसाक्षात्श्रुतिभी तिसप्रकृतिविषे अनादिपणेकूं कथनकरेहै ॥ किंवा जैसे मायारूप प्रकृतिविषेसो अनादिपणायुक्तिकरिकै तथाश्रुतिकरिकै सिद्धहै ॥ तैसे क्षेत्रज्ञनामा जीवात्मापुरुषविषेभी सोअनादिपणा युक्तिकरिकै तथाश्रुतिकरिकै सिद्धहै ॥ सोदिखावैहै ॥ इनसर्वप्राणीमात्रकूं जन्मकालविषेहीं हर्ष शोक भय सुख दुःख प्रवृत्ति इत्यादिक प्राप्तहोवैहैं ॥ तिनहर्षशोकादिकोंविषे इसजन्मकेतौ धर्मअधर्मसंस्कार कारणहैंनहीं ॥ किंतु तिनजीवोंकूं तेहर्षशोकादिक पूर्वजन्मके धर्मअधर्मकरिकै तथासंस्कारोंकरिकैहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेधर्मअधर्मादिकधर्म आश्रयतैंविना संभवतेनहीं ॥ यातैं इसजन्मतैंपूर्वजन्मोंविषेभी ताजीवात्माकीविद्यमानता अंगीकारकरणीहोवैंगी ॥ इसप्रकारतैं धर्मअधर्मादिकोंकीआश्रयतारूपकरिकै इसजीवात्माविषे अनादिपणा सिद्धहोवैहै ॥ किंवा इसजीवात्माकूं जोकदाचित् अनादिनहींमानिये ॥ किंतु उत्पत्तिवाला मानिये ॥ तौ पूर्वक-येहुएपुण्यपापकर्मोंका सुखदुःखरूपफलकेभोगतैंविनाहीं नाशहोवैगा ॥ तथा पूर्वनहींक-येहुएपुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोगहोवैगा ॥ याप्रकारके कृतनाश तथाअकृताभ्यांगम यहदोनोंदोष प्राप्तहोवैगे ॥ तिनदोनोंदोषोंकी निवृत्तिवासतैंभी इसजीवात्माकूं अनादिहीं मान्याचहिये ॥ और ( अजोह्येकोजुषमाणोनुशेते ) इत्यादिकश्रुतियांभीतिसजीवात्माकूं अनादिहीं कथनकरेहैं इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सामायानामाप्रकृति अनादिहै ॥ इसकारणतैं तामायानामाप्रकृतिविषे जोपूर्व सर्वभूतोंकाकारणपणा कथनक-याथा सो संभवहोइसकेहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ( विकारांश्चेति ) हेअर्जुन आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहजेपंचमहाभूतहैं ॥ तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन यहजे एकादशइंद्रियहैं ॥ इनषोडशोंकानाम विकारहै ॥ तथा सुख दुःख मोहरूप जे



सत्त्व रज तम यह तीनगुणहैं ॥ तिनषोडशाविकारोंकूं तथातीनगुणोंकूं तूतिसमायारूपप्रकृतिहैं उत्पन्नहुआजान इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ अबतिनविकारोंविषे प्रकृतिजन्यत्वका विवेचनकरताहुआ श्रीभगवान् तिसक्षेत्रज्ञपुरुषविषे संसारकाहेतुपणा दिखावैहै ॥

( मू० श्लो० ) कार्यकरणकर्तृत्वेहेतुः प्रकृतिरुच्यते ॥ पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ॥ २० ॥ कार्यकरणकर्तृत्वे । हेतुः ।

प्रकृतिः । उच्यते । पुरुषः । सुखदुःखानां । भोक्तृत्वे । हेतुः । उच्यते ॥ २० ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन कार्यकरणोकेकर्त्तापिणे

विषे सांप्रकृतिहीं हेतु कहीजावैहै तथा सुखदुःखोंके भोक्तापिणेविषे सोपुरुषहीं हेतु कहीजावैहै ॥ २० ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ इहां शरीरकानामकार्य है ॥ और ताशरीरविषेस्थित जे पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय मन बुद्धि चित्तयहत्रयोदशइंद्रियहैं तिनोंकानाम करणहै ॥ इहांइसदेहकाआरंभकरणेहारे आकाशादिकपंचभूत तथाशब्दादिकपंचविषय यहसर्व ताशरीररूपकार्यकेग्रहणकरिकैग्रहणकरणे ॥ औरसुखदुःखमोहरूप सत्त्व रज तम यहतीनगुण तिसकरणकेआश्रितहोणेतैं ताकरणकेग्रहणकरिकै ग्रहणकरणे ॥ ऐसेकार्योंके तथाकरणोंके कर्तृत्वविषे अर्थात् तिसकार्यकरणकेआकारपरिणाम विषे महाऋषियोंनैं सामायारूपप्रकृतिहीं कारणरूपकहीहै ॥ तहां किसीपुस्तकविषे ( कार्यकारणकर्तृत्वे ) याप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठ विषेभी यहपूर्वउक्तअर्थहींजानना ॥ इसप्रकारमायारूपप्रकृतिविषे संसारकाकारणपणा कथनकरिकै अब तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषविषेभी जिसप्रकारका सोकारणप णाहै ताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ( पुरुषःइति ) हेअर्जुन जोक्षेत्रज्ञरूप जीवनामापुरुष पूर्व पराप्रकृति इसनामकरिकैकथनकन्याथा ॥ सोक्षेत्रज्ञपुरुष सुखदुःखोंके भोक्तृत्वविषे कारण कहीजावैहै ॥ अर्थात् सुखदुःखमोहरूप सर्वभोग्यपदार्थोंके वृत्तिमुक्तअनुभवविषे कारण कहीजावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतों ( कार्यकरणकर्तृत्वे ) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकन्याहै ॥ ताक्षेत्रज्ञपुरुषके कार्यपिणेविषे तथाकरणपिणेविषे तथाकर्त्तापिणेविषे सामायारूपप्रकृतिहीं तापुरुषकेसाथि तादात्म्यभावकंप्राप्तहुई कारणहोवैहै ॥ जैसे अग्निकेसाथि तादात्म्यभावकंप्राप्तहुआलोह तिसअग्निकेचतुष्कोणत्वआदिकोंका कारणहोवैहै ॥ तैसे तापुरुषकेसाथि तादात्म्यभावकंप्राप्तहुई सामायारूपप्रकृतिहीं तापुरुषके कार्यपिणेविषे तथाकरणपिणेविषे तथाकर्त्तापिणेविषे कारणहोवैहै ॥ इसप्रकार ताप्रकृतिके सुखदुःखोंकेभोक्तापिणेविषे सोक्षेत्रज्ञपुरुषहीं ताप्रकृतिविषेआपणेआभासरूपछायाकीप्राप्तिकरिकै कारणहोवैहै ॥ जैसे अग्नि लोहविषेआपणीछायाकीप्राप्तिकरिकै तालोहकेदाह कर्त्तापिणेविषे कारणहोवैहै ॥ तैसे सोक्षेत्रज्ञपुरुषभी ताप्रकृतिविषेआपणेछायाकीप्राप्तिकरिकै ताप्रकृतिके सुखदुःखोंकेभोक्तापिणेविषे कारणहोवैहै ॥ सोदिखावैहै ॥ कार्यपणा करणपणा कर्त्तापणा यहतीनों वास्तवतैं प्रकृतिकेविकाररूपदेहइंद्रियबुद्धिकेधर्महुएभी चेतनआत्माविषे आरोपणकन्येजावैहै ॥ जैसे मैगौरहूं मैइसमनु



प्यकापुत्रहं मैंकाणाहं मैंखंजहं मैंकर्त्ताहं इसप्रकारतैं देहादिकोंके कार्यत्वादिकधर्म चेतनआत्माविषे आरोपितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और तिसचेतनआत्माकेआभा सरूपछायाकूं प्राप्तहुई साबुद्धिभी मैंचेतनतावालीहूं तथासुखदुःखादिकोंकूं मैं जानतीहूं इसप्रकारतैं चेतनआत्माकेधर्मोंकूं आपणेविषेमानेहै ॥ इसप्रकारका जो प्रकृतिपुरुषदोनोंविषे परस्पर धर्मोंकाअध्यासहै ॥ सोअध्यासहीं इससंसारकाकारण सिद्धहोवैहै ॥ इतनैकहणेकरिकै जोसांख्येयोंनैं केवलपुरुषविषेहींभोक्तापणा मान्याहै सोभी खंडनहुआजानणा ॥ जोकदाचित् ऐसानहींअंगिकारकरिये ॥ किंतु प्रकृतिकूं तौ कर्त्तामानिये और पुरुषकूं भोक्तामानिये ॥ तौ कर्तृत्व भोक्तृत्व इनदोनोंका एकअधिकरण सिद्धनहींहोवैगा ॥ किंतु भिन्नभिन्न अधिकरणसिद्धहोवैगा ॥ सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ और भोक्तापुरुषविषे निर्विकारपणाभी सिद्धहोवै गानहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ( पुरुषःसुखदुःखानांभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ) इसवचनकरिकै पूर्वआपनैं क्षेत्रज्ञनामापुरुषविषे सुखदुःखकाभोक्तृ त्वरूप संसारीपणा कथनकन्या ॥ सो तिसपुरुषकेसंसारीपणेविषे कोईनिमित्तहै अथवा नहींहै ॥ तहां किसीनिमित्ततैंविना जो तिसपुरुषविषेसंसारीपणा मानौंगे ॥ तौ मुक्तिकालविषेभी तिसपुरुषविषे सोसंसारीपणा होणाचहिये ॥ इसदोषकी निवृत्तिकरणेवासतै तापुरुषकेसंसारीपणेविषे कोईनिमित्त अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सोनिमित्त कौनहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तानिमित्तकूं कथनकरेहै ॥

( मू० १० लोक ) पुरुषः प्रकृतिर्योहिभुंके प्रकृतिजान्गुणान् ॥ कारणं गुणसंगोऽस्य सदस्यो निजन्मसु ॥ २१ ॥ पुरुषः । प्रकृतिर्यः । हिं । भुंके । प्रकृतिजान् । गुणान् । कारणं । गुणसंगः । अस्य । सदस्यो निजन्मसु ॥ २१ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन यहक्षेत्रज्ञपुरुष मायारूपप्रकृतिविषेस्थितहुआहीं तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं भोगेहैं यातै सत् असत् योनिजन्मोंविषे इसपुरुषका त्रिगुणात्मकप्रकृतिकेसाथितादात्म्यहीं कारणहै ॥ २१ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष प्रकृतिविषेस्थितहुआहीं अर्थात् मायारूपप्रकृतिकेसाथि मिथ्यातादात्म्यभावकूं प्राप्तहुआहीं तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं भोगेहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकीवृत्तिकरिकै तिनसुखदुःखादिकोंकूं अनुभवकरेहै ॥ यातैं तिसप्रकृतिजन्यसुखदुःखादिकगुणोंकेभोगकास्थानरूप जो सत् योनिविषेजन्महै तथाअसत् योनिविषेजन्महै तथासत् असत् योनिविषेजन्महै तिनजन्मोंकीप्राप्तिविषे इसक्षेत्रज्ञनामापुरुषका गुणसंगहीं कारणहै ॥ अर्थात् सत्त्वरजतम यहतीनगुणात्मक मायारूपप्रकृतिविषे तिसपुरुषका तादात्म्यअभिमानहीं कारणहै ॥ ताप्रकृतिकेतादात्म्यअभिमानतैंविना तिसअसंगपुरुषकूं स्वभावतैं सोफलभोक्तृत्वरूपसंसार संभवतानहीं ॥ तहां इंद्रादिकदेवताशरीरतौ सत् योनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनदेवताशरीरोंविषे सात्त्विकदृष्टफलहीं भोग्याजावैहै ॥



और पशुआदिक असत्तयोनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनपशुआदिकशरीरोंविषे तामसअनिष्टफलहीं भोग्याजावैहै ॥ और ब्राह्मणादिकमनुष्यशरीरतों धर्म  
अधर्मदोनोंकरिकैमिश्रितहोणेतैं सत्तअसत्तयोनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनमनुष्यशरीरोंविषे राजस इष्टअनिष्टमिश्रितफल भोग्याजावैहै इति ॥ अथवा ( गुण  
संगः ) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ सुखदुःखमोहरूप जेशब्दादिकविषयरूपगुणहैं ॥ तिनशब्दादिकगुणोंविषे जोइसपुरुषका अभिलाषारूपसंगहै जिसअ  
भिलाषारूपसंगकूं शास्त्रविषे काम इसनामकरिकैकथनकन्याहै ॥ ऐसागुणसंगहीं इसपुरुषकूं सत्तअसत्तयोनिजन्मोंविषे कारणहोवैहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी  
कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( सयथाकामोभवति तत्क्रतुर्भवति यत्क्रतुर्भवति तत्कर्मकुरुते यत्कर्मकुरुते तदभिसंपद्यते ॥ ) अर्थयह ॥ सोपुरुष जिसवस्तुविषयक  
अभिलाषारूपकामवालाहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषयकहीं निश्चयवालाहोवैहै ॥ और जिसवस्तुविषयकनिश्चयवालाहोवैहै ॥ तिसवस्तुकीप्राप्तिवासतैहीं कर्मकूकरेहै ॥  
और जिसवस्तुकीप्राप्तिवासतै कर्मकूकरेहै ॥ तिसीहींवस्तुकंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसपक्षविषेभी तासंसारकामूलकारणरूपकरिकैतौ सो त्रिगुणात्मकप्रकृतिकाता  
दात्म्यअभिमानहींअंगीकारकरणा इति ॥ और किसीटीकाविषेतों ( पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंकेप्रकृतिजान्गुणान् ) इसवचनका यहअर्थकन्याहै देह इंद्रिय मन इत्या  
दिकसंघातकानाम प्रकृतिहै ॥ ऐसीप्रकृतिविषे तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआहीं यहपुरुष तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखमोहरूपगुणोंकूंभोगेहै ॥ जिसकालविषे सुषुप्तिसमा  
धिमूर्च्छादिकोंविषे इसपुरुषका तिसप्रकृतिविषेस्थितपणानहींहै ॥ तिसकालविषे तासुषुप्तिसमाधिमूर्च्छादिकोंविषे यहपुरुष तिनसुखदुःखादिकोंकूं प्राप्तहो  
वैनहीं ॥ यातैं तेसुखदुःखादिक केवल उपाधिविषेहींस्थितहैं ॥ ताउपाधिकेअभावहुए तेसुखदुःखादिक प्रतीतहोवैनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहवार्ताश्रु  
तिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ) ॥ अर्थयह ॥ देह श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै तथा मनकरिकै युक्तहुआहीं  
यहआत्मा भोक्ताहोवैहै ॥ इसप्रकार तत्त्ववेत्तापुरुष कथनकरेहैं इति ॥ यहश्रुति देह इंद्रियमनकेयोगतैंही आत्माविषेभोक्तापणेकूंदिखावतीहुई केवलशुद्धआत्माविषे  
ताभोक्तापणेकानिषेधकरेहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतों ( पुरुषःप्रकृतिस्थोहि ) इसश्लोकका यहअर्थकन्याहै ॥ देह इंद्रिय मन इत्यादिकजडपदार्थोंकासं  
घातरूप जाप्रकृतिहै ॥ तिसप्रकृतिविषेस्थितहुआ विद्वान् पुरुष अथवाअविद्वान्पुरुष तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं समानहीं भोगेहै ॥ यहवार्ता ब्रह्म  
सूत्रोंविषे श्रीभाष्यकार भगवान्नेभी कथनकरीहै ॥ ( पश्वादिभिश्चाविशेषात् ) ॥ अर्थयह ॥ व्यवहारकालविषे विद्वान्पुरुषकी पशुआदिकोंकेसाथि तुल्य  
ताहींहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे पशुआदिक इष्टवस्तुकूंदेखिकै प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और अनिष्टवस्तुकूंदेखिकै निवृत्तहोवैहैं ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुषभी इष्टवस्तुकूंदेखिकेतों  
प्रवृत्तहोवैहै ॥ और अनिष्टवस्तुकूंदेखिकै निवृत्तहोवैहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् प्रकृतिविषेस्थितहोइके ताप्रकृतिजन्यसुखदुःखादिकगुणोंकेभोगविषे जो विद्वान्पुरुषकी



तथा अविद्वान्पुरुषकी समानताहीं अंगीकारकरौंगे ॥ तौ जैसे सोविद्वान्पुरुष मुक्तहै तैसे सोअविद्वान्पुरुषभी क्युंनहींमुक्तहोता ॥ तथा जैसे सोअविद्वान्पुरुष बंधायमानहै तैसेसोविद्वान्पुरुषभी क्युंनहींबंधायमानहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै ( कारणंगुणसंगोस्यसदसद्योनिजन्मसुइति ) हेअर्जुन देहइं द्रियविषयरूपगुणोविषे जोइसपुरुषका संगहै ॥ अर्थात् यहमैंहूं यहमेरेहैं इसप्रकारकाजो अहंममअभिमानरूप अभिनिवेशहै ॥ सोगुणसंगहीं इसपुरुषके सत्असत् योनिजन्मोंविषे कारणहैं ॥ तहां विद्वान्पुरुषोंविषेतौ सोजन्मकाकारणरूप गुणसंग हैनहीं ॥ यातैं तेविद्वान्पुरुष जन्मादिकबंधकंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और अविद्वान्पुरुषोंविषेतौ सोजन्मकाकारणरूप गुणसंग विद्यमानहै ॥ यातैं तेअविद्वान्पुरुष मुक्तिकंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे किसीपुरुषकेदेहविषे पिशाच प्रवेशकरेहै ॥ तहां तिसदेहविषे तापिशाचकाभीसंबंधहै ॥ तथा तिसदेहपतिजीवकाभीसंबंधहै ॥ तिसदेहसंबंधकेसमानहुएभी जिसकालविषे सोपिशाच तिसदेहके अभिमानकंधारणकरेहै ॥ तिसकालविषेतौ सोपिशाचहीं तिसदेहकीपीडाकरिकै पीडितहोवैहैं ॥ सोदेहपतिजीव तादेहकीपीडाकरिकै पीडितहोवैनहीं ॥ और जिस कालविषे सोदेहपतिजीवहीं तिसदेहकेअभिमानकंधारणकरेहै ॥ तिसकालविषे सोदेहपति जीवहीं तिसदेहकीपीडाकरिकैपीडितहोवैहै ॥ सोपिशाच तादेहकीपीडा करिकैपीडितहोवैनहीं ॥ इसप्रकारतैं अहं ममअभिमानरूपसंगविषेहीं बंधकपणा प्राप्तिदेखनेविषेआवैहै ॥ समीपतामात्रविषे सोबंधकपणा देखनेविषेआव तानहीं ॥ यातैं विद्वान्पुरुषविषे तथाअविद्वान्पुरुषविषे देहसंबंधकेसमानहुएभी अहंममअभिमानरूपसंगकृत तथाता संगके अभावकृत तिनदोनोंविषे महान्विशेषताहै इति ॥ २१ ॥ \* ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे प्रकृतिकेमिथ्यातादात्म्यअध्यासतैंहीं पुरुषकूं संसारकीप्राप्तिहोवैहै ताप्रकृतिकेतादात्म्यतैंविना स्वरूपतैं तापुरुषविषे सोसंसारहै नहीं यहवार्त्ता कथनकरी ॥ अब तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषका किसप्रकारकासोवास्तवस्वरूपहै जिसस्वरूपविषे सोसंसारनहीं संभवैहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषकेस्वरूपकूं साक्षात्दिखावताहुआ कहेहै ॥

( मू० श्लो० ) उपद्रष्टानुमंताचभर्त्ताभोक्तामहेश्वरः ॥ परमात्मेतिचाप्युक्तोदेहेऽस्मिन्पुरुषःपरः ॥ २२ ॥ उपद्रष्टा । अनुमंता । च । भर्त्ता । भोक्ता । महेश्वरः । परमात्मा । इति । च । अपि । उक्तः । देहे । अस्मिन् । पुरुषः । परः ॥ २२ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन इस देहविषे वर्त्तमानहुआभी यहपुरुष सर्वतैंभिन्नहै जिसकारणतैं यहपुरुष उपद्रष्टाहै तथा अनुमंताहै तथा भर्त्ताहै तथा भोक्ताहै तथामहेश्वरहै तथा श्रुतिविषे परमात्मा इसनामकरिकैभी कथनकन्याहै ॥ २२ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिसमायारूपप्रकृतिकापरिणामरूपजोयहदेहहै ॥ इसदेहविषे जीवरूपकरिकैवर्त्तमानहुआभी यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष परहै ॥ अर्थात् तिसप्रकृति



जन्यगुणोंकेसंबंधतैरहितहै तथाआपणस्वरूपकरिकै परमार्थतैअसंसारीहै ॥ अब तिसपुरुषके वास्तवतैअसंगपणविषे श्रीभगवान् उपद्रष्टा अनुमंता भर्ता भोक्ता  
 महेश्वर परमात्माइनषट् हेतुगर्भितविशेषणोंकूंकथनकरैहै ( उपद्रष्टाइति ) हेअर्जुन सोक्षेत्रज्ञनामापुरुष कैसाहै उपद्रष्टाहै ॥ अर्थात् जैसे यज्ञरूपकर्मकीसिद्धिकरणे  
 वासतै व्यापारवालेहुए जेऋत्त्विकहैं तथायजमानहै ॥ तिनऋत्त्विकयजमानकेसमीपवर्ती जोकोईअन्यपुरुषहै ॥ सोअन्यपुरुष आपतिसयज्ञकेअनुकूलव्यापारतैरहि  
 तहुआभी यज्ञविद्याविषे कुशलहोणेतै तिनऋत्त्विकयजमानकेव्यापारोंविषेस्थितगुणदोषोंकू देखैहै ॥ तैसे यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष देहइंद्रियादिकोंके व्यापारविषे आप  
 नहींव्यापारवालाहुआ तथातिनदेहइंद्रियादिकोंतैविलक्षणहुआ तिनव्यापारसहितदेहइंद्रियादिकोंकू समीपस्थितहोइकैदेखैहै ॥ सोक्षेत्रज्ञनामापुरुष तिनदेहइंद्रियादि  
 कोंकी न्यांई आपकर्त्ताहोवैनहीं ॥ यातै यहआत्मादेव उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( सयत्तत्रकिंचित्पश्यत्यनन्वागतस्तेनभवत्यसंगोऽन्यपुरुषः ) ॥ अ  
 र्थयह ॥ यहआत्मादेवपुरुष तिनजाग्रत्स्वप्नादिकअवस्थाओंविषे जिसजिसपदार्थकूदेखैहै ॥ तिसतिसपदार्थकेसाथि संबंधवालाहोवैनहीं ॥ जिसकारणतै यहआ  
 त्मापुरुष असंगहै इति ॥ अथवा देह चक्षु मन बुद्धि आत्मा इनपांचद्रष्टावोंके मध्यविषे बाह्यदेहादिकच्यारि द्रष्टावोंकी अपेक्षाकरिकै अव्यवहितद्रष्टाजो आत्मा  
 पुरुषहै ॥ सोआत्मापुरुष उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ तहां उपद्रष्टा इसवचनाविषेस्थितजो उप यहशब्दहै ॥ ताउपशब्दका समीपताअर्थहै ॥ सोअव्यवधानरूप समी  
 पताअर्थ प्रत्यक्आत्माविषेहीघटेहै ॥ अन्यकिसीअनात्मपदार्थविषे घटतानहीं ॥ इतनैकहणेकरिकै श्रीभगवान् तै यहअनुमानसूचनकन्या ॥ आत्मा देह  
 इंद्रियादिकोंतैभिन्नहै उपद्रष्टाहोणेतै ॥ जैसेयज्ञका उपद्रष्टापुरुष तायज्ञकेकर्त्ताऋत्त्विकयजमानतैभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञआत्मापुरुष  
 अनुमंताहै ॥ अर्थात् देहइंद्रियोंकीप्रवृत्तिविषे आप नहींप्रवृत्तहुएभी प्रवृत्तहुएकीन्यांई समीपतामात्रकरिकै तिनोंकेअनुकूलहोणेतै साक्षेत्रज्ञपुरुष  
 अनुमंता कह्याजावैहै ॥ अथवा आपणेआपणेव्यापारोंविषेप्रवृत्तहुए जेदेहइंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंकू जोकदाचित्भी आपणेव्यापारतै  
 निवृत्तकरतानहीं ॥ सोतिनदेहइंद्रियादिकोंकासाक्षिरूपपुरुष अनुमंता कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( अनुमंतासाक्षीच उपद्रष्टानुद्रष्टानुमंतैषआत्मा ॥ ) अर्थ  
 यह ॥ यहआत्मादेव अनुद्रष्टाहै तथासाक्षीहै ॥ तथा यहआत्मादेव उपद्रष्टाहै तथा अनुमंताहै इति ॥ इतनैकहणेकरिकै श्रीभगवान् तै यहअनुमान सूचनकन्या ॥  
 आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैभिन्नहै अनुमंताहोणेतै ॥ जैसे विवादकर्त्तापुरुषतै तटस्थपुरुष भिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञपुरुष भर्ताहै ॥ अर्थात् चैतन्य  
 केआभासकरिकैयुक्त तथासंघातभावकूंप्राप्तहुए जे देह इंद्रिय मन बुद्धिहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंकू सोक्षेत्रज्ञ आत्मापुरुष आपणीसत्ताकरिकै तथास्फुरणकरिकै  
 धारणकरणेहाराहै ॥ तथापोषणकरणेहाराहै ॥ इतनैकहणेकरिकै श्रीभगवान् तै यहअनुमान सूचनकन्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतै भिन्नहै भर्ताहोणेतै ॥



जैसे पुत्रादिकोंका भरणकरणे हारा पिता तिन पुत्रादिकोंतैं भिन्न होवै है इति ॥ पुनः कैसा है सो क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुष भोक्ता है अर्थात् बुद्धिकी सुखदुःख मोक्षरूप जे वृत्तियां विशेष हैं ॥ तिन वृत्तियोंकूं स्वरूप चैतन्य करिकै प्रकाश करता हुआ यह आत्मा देव निर्विकार हुआ हीं तिन सुखादिकोंका उपलब्धा है ॥ इतनै कहने करिकै श्री भगवान् नैं यह अनुमान सूचन कन्या ॥ आत्मा बुद्धि आदिकोंतैं भिन्न है भोक्ता होणेतैं जैसे देव दत्त नामा भोक्ता पुरुष अन्नादिक भोज्य पदार्थोंतैं भिन्न होवै है इति ॥ पुनः कैसा है सो क्षेत्रज्ञ पुरुष महेश्वर है ॥ तहां महान् होवै सोई हीं ईश्वर होवै ताका नाम महेश्वर है ॥ तहां सर्वका आत्मा रूप होणेतैं सो क्षेत्रज्ञ पुरुष महान् कहा जावै है ॥ और स्वतंत्र होणेतैं ईश्वर कहा जावै है ॥ अथवा जैसे चुंबक पाषाण की समीपता करिकै लोह चेष्टा करे है ॥ तैसे जिसकी समीपता मात्र करिकै यह बुद्धि आदिक सर्व पदार्थ नाना प्रकार की चेष्टा करे हैं ॥ सो क्षेत्रज्ञ आत्मा ईश्वर कहा जावै है ॥ तहां श्रुति ॥ ( महतो महीयान् ईशानो भूतभव्यस्य ) ॥ अर्थ यह ॥ यह आत्मा देव आकाशादिक महान् पदार्थोंतैं भी अत्यंत महान् है ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्तमान सर्व जगत् का प्रेरणा करणे हारा ईशान है इति ॥ इतनै कहने करिकै श्री भगवान् नैं यह अनुमान सूचन कन्या ॥ आत्मा प्रकृति तैं तथा ताके कार्यतैं भिन्न होणे कूं योग्य है महेश्वर होणेतैं जैसे महाराजा आपणी प्रजातैं भिन्न होवै है इति ॥ पुनः कैसा है सो क्षेत्रज्ञ पुरुष ॥ श्रुति विषे परमात्मा इस शब्द करिकै कथन कन्या है ॥ अर्थात् अविद्या के वशतैं आत्मत्वरूप करिकै कल्पना कन्ये जे देह तैं आदिलै के बुद्धि पर्यंत जड पदार्थ हैं ॥ तिन सर्व जड पदार्थोंतैं जो उत्कृष्ट होवै ताकूं परम कहै हैं ॥ ऐसा परम जो पूर्व उक्त उपद्रष्टृत्वादिक विशेषण विशिष्ट आत्मा है ताका नाम परमात्मा है ॥ यह वार्ता ॥ ( उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ) इस वचन करिकै श्री भगवान् आप हीं आगे कथन करैगा ॥ इतनै कहने करिकै श्री भगवान् नैं यह अनुमान सूचन कन्या है ॥ आत्मा देह इंद्रियादिकोंतैं भिन्न है परमात्मा होणेतैं जो देह इंद्रियादिकोंतैं भिन्न नहीं होवै है सो परमात्मा भी नहीं होवै है जैसे देह इंद्रियादिक हैं इति ॥ और किसी टीका विषेतों ( उपद्रष्टानुमंता च ) इस श्लोक का यह अर्थ कन्या है ॥ तहां पूर्व ( सच यो यत्प्रभावश्च ) इस वचन करिकै क्षेत्रज्ञ तथा ता क्षेत्रज्ञ का प्रभाव इन दोनों के वर्णन करणे की प्रतिज्ञा करी थी ॥ तहां क्षेत्रज्ञ का स्वरूप तों पूर्व वर्णन कन्या ॥ अब इस श्लोक करिकै ता क्षेत्रज्ञ के प्रभाव का वर्णन करे है ॥ ( उपद्रष्टा इति ) तहां पूर्व श्लोक विषे पुरुष का देह इंद्रिय मन आदिक गुणों के साथी जो संग है सो गुण संग हीं इस पुरुष के जन्म का कारण है यह वार्ता कथन करी थी ॥ तहां सो गुण संग चार प्रकार का होवै है ॥ एक तों पुरुष का निषेध करिकै तिस गुण मात्र की प्रधानता करिकै गुण संग होवै है ॥ और दूसरा तिस पुरुष कूं अंतर भूत करिकै तिस गुण की प्रधानता करिकै गुण संग होवै है ॥ और तीसरा पुरुष की तथा तिन गुणों की सम प्रधानता करिकै सो गुण संग होवै है ॥ और चौथा तिन गुणों की अप्रधानता करिकै तथा ता पुरुष की प्रधानता करिकै गुण संग होवै हैं ॥ तहां प्रथम गुण संग विषेतों देह इंद्रिय मन आदिरूप गुणों के संघात कूं हीं आत्मा रूप करिकै देखता हुआ यह पुरुष भोक्ता कहा जावै है ॥ जैसे देहादिकों कूं हीं आत्मा मानने हारे



चार्वाकादिकहैं ॥ और दूसरेगुणसंगविषेतों तिनदेहइंद्रियादिरूपगुणोंकूहींप्रधानहोणेतें आत्माविषेवास्तवकर्तृत्वादिअभिमानकरिकै यहपुरुष कर्मकेफलका भर्ता कहाजावैहै ॥ जैसे नैयायिकआदिकहैं ॥ और तीसरेगुणसंगविषेतों आत्माकेसाथि तिनगुणोंकी समप्रधानताकरिकै गुणविषे स्थितभीभोक्तापणेकूं असंगभीआत्माविषे वस्त्रविषेभल्लातककेअंकोंकीन्यांई यहपुरुष मानताहुआ अनुमंता कहाजावैहै ॥ जैसे सांख्यशास्त्रवालेपुरुषहैं ॥ और चौथेगुणसंगविषेतों सर्वप्रकारतै तिनगुणोंके धर्मोंका आत्माविषेप्रवेश नहींदेखताहुआ उदासीनबोधरूपताकरिकै तिनसर्वगुणोंकेप्रचारोंकूदेखताहुआ यहपुरुष उपद्रष्टा कहाजावैहै ॥ जैसे हमवेदांतीयोंका साक्षीआत्माहै ॥ तहां पूर्वकथनकन्येजे भोक्ता भर्ता अनुमंता उपद्रष्टा यहच्यारि गुणोंकेसंगवालेहैं ॥ तिनच्यारों गुणसंगीयोंविषे उपद्रष्टातों उत्तमहै ॥ और अनुमंता मध्यमहै ॥ और भर्ता अधमहै ॥ और भोक्ता अधमतैअधमहै ॥ और जोचैतन्यदेव ॥ तिनगुणोंकेसंगतें भोक्तादिभावकूंप्राप्तहुआहै ॥ सोईहींचैतन्यदेव जिसकालविषे तिनसर्वगुणोंकूंआपणेवशकरिकै क्रीडाकरेहै तिसकालविषे महेश्वर इसनामकरिकै कहाजावैहै ॥ और जोचैतन्यदेव इसजगत्के उत्पत्ति स्थितिलयकाकर्ता प्रभु अंतर्यामीहै ॥ सोईहींचैतन्यदेव तिनसर्वगुणोंकापरित्यागकरिकैस्थितहुआ परमात्मा इसनामकरिकैभी कहाजावैहैं ॥ यद्यपि उपद्रष्टाभी गुणोंकापरित्यागकरिकै तिनगुणोंकासाक्षीरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तथापि संघातउपहित तिसीहींउपद्रष्टाकूं दूसरेसंघातकेप्रचारकाद्रष्टापणा हैनहीं ॥ और परमात्मादेवतों सर्वसंघातोंकेप्रचारोंकाद्रष्टाहै ॥ यातें सर्वतेंउत्कृष्टहोणेतें यह परमआत्माहै ॥ इसीपरमात्माकूं ( उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश्यविभर्त्यव्ययईश्वरः ) इसश्लोककरिकै श्रीभगवान् आगेकथनकरेंगा ॥ तहां महेश्वर परमात्मा यहदोनोंभी गुणसंगीहींहैं ॥ यातेंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसदेहविषे विद्यमान तथासर्वगुणोंकूंआपणेविषेलयकरिकैस्थित ऐसाजोसर्वगुणोंतैरहित अखंड एकरस अद्वितीयआत्माहैं ॥ सोएकआत्मादेवहीं तिस गुणसंगकरिकै उपद्रष्टा अनुमंता भर्ता भोक्ता महेश्वर परमात्मा यहषट् प्रकारकाहोवैहै ॥ यहहीं इसक्षेत्रज्ञआत्माका प्रभावहै ॥ तहां अनुमंता भर्ता भोक्ता इनतीनरूपोंकरिकैतों यहआत्मादेव बंधायमानहोवैहै ॥ और उपद्रष्टा महेश्वर परमात्मा इनतीनरूपोंकरिकैतों यहआत्मादेव नित्यमुक्तएकअद्वितीयरूपहींहोवैहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व ( सचयोयत्प्रभावश्च ) इसवचनका व्याख्यानकन्या ॥ अर्थात् क्षेत्रज्ञकास्वरूप तथाताकाप्रभाव वर्णनकन्या ॥ अब ( यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते ) यहजोवचन पूर्वकथनकन्याथा ताका उपसंहारकरेहैं ॥

( मू० श्लो० ) यएवंवेत्तिपुरुषंप्रकृतिंचगुणैःसह ॥ सर्वथावर्तमानोपिनसभूयोभिजायते ॥ २३ ॥ यः । एवम् । वेत्ति । पुरुषम् । प्रकृतिं । च । गुणैः । सह । सर्वथा । वर्तमानः । अपि । न । सः । भूयः । अभिजायते ॥ २३ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन जो



अधिकारीपुरुष इसपूर्वउक्तप्रकारतै क्षेत्रज्ञपुरुषकूं तथा आपणेविकारों सहित अविद्यारूपप्रकृतिकूं जानेहै सोपुरुष सर्वप्रकारतै वर्तमानहुआ भी पुनः नहीं जन्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २३ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै क्षेत्रज्ञनामापुरुषकूं जानेहै ॥ अर्थात् यहसर्वत्र व्यापकपरमात्मादेव मैंहूं याप्रकारतै जोपुरुष इसक्षेत्रज्ञआत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतै साक्षात्कारकरेहै ॥ तथा जोपुरुष देहादिविकारोंसहित अविद्यारूपप्रकृतिकूंजानेहै ॥ अर्थात् यहदेहादिकविकारों सहित अविद्यारूपप्रकृति आत्मज्ञानकरिकैबाधितहोणेतै मिथ्याभूतहीहै ॥ ताआत्मज्ञानकरिकै हमारा अज्ञान तथाताअज्ञानकार्यरूप प्रपंचदोनों निवृत्तहोइगएहैं ॥ इसप्रकारतै जोपुरुष तागुणसहितप्रकृतिकूंजानेहैं ॥ सोसत्त्ववेत्तापुरुष सर्वथावर्तमानहुआभी अर्थात् अतिप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतै देवराजइंद्रकीन्यांई शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै वर्तमानहुआभीपुनःजन्मकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् इसविद्वान्पुरुषकूं जिसशरीरविषेआत्मज्ञानकीप्राप्तिहुईहै ॥ तिसशरीरकेपातहुएतै अनंतर सोतत्त्ववेत्तापुरुष पुनःद्वितीयदेहकूंग्रहणकरैनहीं ॥ काहेतै अविद्याकरिकैहीं इसपुरुषकूं पुनःजन्मकी प्राप्तिहोवैहै ॥ ब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्यारूपकारणका जबी नाशहोवैहै ॥ तबी ताअविद्याकेजन्मादिकार्योंकाभी अभावहोइजावैहै ॥ यहवार्ता ॥ पूर्व बहुतवार कथनकरिआयेहैं ॥ किंतु पुण्यपापकर्मोंकरिकैहीं इसपुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तेपुण्यपापकर्म इसतत्त्ववेत्तापुरुषके आत्मज्ञानकरिकै नाशहोइजावैहैं ॥ याकारणतैभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नेभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ ( तदधिगमउत्तरपूर्वाध्यायोरश्लेषाविनाशौतद्व्यपदेशात् ) ॥ अर्थ यह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषके पूर्वलेपुण्यपापरूप सर्वसंचितकर्म नाशकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और तिसआत्मज्ञानतैउत्तरकन्येहुएकर्मोंका तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं स्पर्शहीनहींहोवैहै ॥ यहवार्ता अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकरीहै इति ॥ इहां ( सर्वथावर्तमानोपि ) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्ने यहकैमुतिकन्यायसूचनकन्या ॥ अतिप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतै देवराजइंद्रकीन्यांई शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै वर्तमानहुआभी यहतत्त्ववेत्तापुरुष जबी पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबी शास्त्रविधिकानहींउल्लंघनकरिकै आपणेश्रेष्ठआचारविषे वर्तमानहुआ सोतत्त्ववेत्तापुरुष पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां देवराजइंद्र शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै जैसे विश्वरूपनामपुरोहितकूं तथाअनेकसंन्यासियोंकूं हननकरताभयाहै ॥ सासर्ववार्ताआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे हम विस्तारतैनिरूपणकरिआयेहैं ॥ इति ॥ २३ ॥ \* ॥ तहां पूर्वकथनकन्येहुएफलसहितआत्मज्ञानविषे अधिकारीजनोंकेभेदकरिकै साधनोंकेविकल्पांकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥



( मू० श्लो० ) ध्यानेनात्मनि पश्यंतिकेचिदात्मानमात्मना ॥ अन्येसांख्येनयोगेनकर्मयोगेनचापरे ॥ २४ ॥ ध्यानेन । आत्मनि । पश्यन्ति । केचित् । आत्मानम् । आत्मना । अन्ये । सांख्येन । योगेन । कर्मयोगेन । च । अपरे ॥ २४ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन केईकअधिकारीजनतों ध्यानकरिकेहीं आपणीबुद्धिविषे प्रत्यक्आत्माकूं ध्यानयुक्तअंतःकरण करिके साक्षात्कारकरेहैं और दूसरेअधिकारीजनतों सांख्य योगकरिके आत्माकूं साक्षात्कारकरेहैं तथा अन्यकेईकअधिकारीजनतों कर्मयोगकरिके आत्माकूं साक्षात्कारकरेहैं ॥ २४ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ तहां इसलोकविषे चारिप्रकारकेअधिकारीजनहोवैहैं ॥ तहां एकअधिकारीजनतों उत्तम होवैहैं ॥ और दूसरेअधिकारीजन मध्यमहोवैहैं ॥ और तीसरेअधिकारीजन मंद होवैहैं ॥ और चौथेअधिकारीजन मंदतर होवैहैं ॥ तिनचारोंविषे प्रथम उत्तमअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ ( ध्यानेनइति ) तहां देहादिकअनात्मपदार्थाकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैरहित आत्माकारसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूप जोआत्मचिंतनहै ॥ जिसआत्मचिंतनकूं शास्त्रविषेनिदिध्यासनशब्दकरिकेकथनकन्याहै तथा जोआत्मचिंतन श्रवणमननकाफलरूपहैं ॥ तथा जिसआत्मचिंतनकरिके देहादिकोंविषे आत्मत्वबुद्धिरूपविपरीतभावनाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तानिदिध्यासनरूप आत्मचिंतनकानाम ध्यानहै ॥ ऐसेध्यानकरिकेहीं केईकउत्तमअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे प्रत्यक्चेतनरूपआत्माकूं ताध्यानयुक्तशुद्धअंतःकरणकरिके साक्षात्कारकरेहैं इति ॥ अब मध्यमअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (अन्ये सांख्येनयोगेनइति ) तहां पूर्वउक्त निदिध्यासनरूपध्यानतैं पूर्वभावी ऐसाजो श्रवणमननरूप आत्मचिंतनहै ॥ जो आत्मचिंतन नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत् मुमुक्षुता इनचारिसाधनोंतैं उत्तर कन्याजावैहै ॥ तथा जो आत्मचिंतन यह त्रिगुणात्मकमायाकेपरिणामरूप सर्वअनात्मपदार्थ मिथ्याभूतहैं और तिनसर्वमिथ्यापदार्थोंकासाक्षीरूप नित्य विभु निर्विकार सत्य समस्तजडपदार्थोंकेसंबंधतैरहित ऐसाजो प्रत्यक्चेतनआत्माहै सोमैंहूं इसप्रकारके वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकेजन्यहै ॥ तथा जो आत्मचिंतन प्रमाणगतअसंभावनाका तथाप्रमेयगतअसंभावनाका निवर्तकहै ॥ ता श्रवणमननरूप आत्मचिंतनकानाम सांख्ययोगहै ॥ ऐसेसांख्ययोगकरिके केईकमध्यमअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे तिसप्रत्यक्आत्माकूं ताध्यानकीउत्पत्तिद्वारा साक्षात्कारकरेहैं इति ॥ अब तीसरेमंदअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानके साधनकूं श्रीभगवान् कहेहै ॥ ( कर्मयोगेनचापरेइति ) तहां फलकीइच्छातैरहितहोइके केवल ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकेकन्येहुए ऐसेजे तिसतिसवर्णआश्रमकेउचितअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकानाम कर्मयोगहै ॥ ऐसेकर्मयोगकरिके केईकमंदअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे तिसप्रत्यक्



आत्माकूं अंतःकरणकीशुद्धि श्रवण मनन ध्यान इनच्यारोंकीउत्पत्तिद्वारा साक्षात्कारकरेहैं इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब चौथेमंदतरअधिकारीजनोके आत्म ज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

( मू०श्लो० ) अन्येत्वेवमजानंतःश्रुत्वान्येभ्यउपासते ॥ तेपिचातितरंत्येवमृत्युंश्रुतिपरायणाः ॥ २५ ॥ अन्ये । तु । एवम् ।  
अजानंतः । श्रुत्वा । अन्येभ्यः । उपासते । ते । अपि । च । अतितरंति । एव । मृत्युम् । श्रुतिपरायणाः ॥ २५ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥  
हेअर्जुन पुनः अन्यअधिकारीजनतों पूर्वउक्तउपायकरिके आत्माकूंनहींजानतेहुए अन्यगुरुवोंतैं श्रवणकरिके आत्माकांचितनक  
रहैं तैंअधिकारीजन भी श्रवणपरायणहुए इसमृत्युयुक्तसंसारकूं अवश्य अतिक्रमणकरेहैं ॥ २५ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ ईहां ( अन्येतु ) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वश्लोकविषेकथनकन्येहुए तीनप्रकारकेअधिकारीयोंतैं इनमंदतर अधिकारीयोंवि  
षे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै ॥ साविलक्षणतादिखावैहैं ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकन्येजे ध्यान सांख्ययोग कर्मयोग यह तीन उपायहैं ॥ तिनतीनों  
उपायोंविषे किसीभी उपायकरिके आत्माकूंनहींजानतेहुएकेईकमंदतर अधिकारीजनतों अन्यपरमकारुणिकआचार्योंतैं श्रवणकरिके उपासनाकरेहैं ॥ अर्थात्  
तुम इसआत्माकूं इसप्रकारतैंचितनकरौ इसप्रकारतैं तिनरूपालुआचार्योंकरिके उपदेशकन्येहुए तथातिनगुरुवोंकेवचनोंविषे अत्यंतश्रद्धावालेहुए तिसीप्रकारतैं  
आत्माकूंचितनकरेहैं ॥ तेऽश्रुतिपरायणपुरुषभी अर्थात् आपणीबुद्धिकरिके ताविचारविषेअसमर्थहुएभी अत्यंतश्रद्धावान्ताकरिके तागुरुकेउपदेशश्रवणमात्र  
परायणहुएभी मृत्युयुक्तइससंसारकूं अवश्यकरिके अतिक्रमणकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ध्यानविषेप्रवृत्तिकीअतिशयतातैं तिनपुरुषोंकूं चित्तकीशुद्धिवासतै कर्मोंकी  
भीअपेक्षाहैनहीं ॥ और वेदउक्ततत्त्वविषेदृढनिश्चयतैं तिनपुरुषोंकूं असंभावनाकीनिवृत्तिवासतै श्रवणमननकीभीअपेक्षाहैनहीं इति ॥ ईहां ( तेपि ) इसवचनवि  
षेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिके श्रीभगवान्ने यहकैमुतिकन्याय सूचनकन्या ॥ जेपुरुष आप विचारकरणेविषेसमर्थनहींहैं किंतु अन्यगुरुवों  
तैंश्रवणमात्रकरिके आत्माकांचितनकरेहैं ॥ तेपुरुषभी जबी इसमृत्युयुक्तसंसारकूंअतिक्रमणकरेहैं ॥ तबी आप विचारविषेसमर्थपुरुष इसमृत्युयुक्तसंसारकूंअ  
तिक्रमणकरेहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां आत्मज्ञानकरिके जो कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरणीहै यहहीं तामृत्युयुक्तसंसारका अतिक्रमणहै इति ॥  
॥ २५ ॥ ❀ ॥ तहां अधिष्ठानब्रह्मकेआश्रितरहणेहारी तथाताब्रह्मकूंहीविषयकरणेहारी ऐसीजा अनिर्वचनीयअविद्याहै ॥ ताअविद्याकरिकेहीं यहसर्वसंसार  
उत्पन्नहुआहै ॥ यातैं ताअधिष्ठानब्रह्मकूंविषयकरणेहारी जा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञानरूपब्रह्मविद्याहै ॥ ताब्रह्मविद्याकरिके ताअविद्याकेनिवृत्तहुए



इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्ति बनिसकेहै ॥ इसअर्थकेनिश्चयकरावणेवासतै इसत्रयोदशेअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान् नैं संसारका तथातासंसार केनिवर्तकआत्मज्ञानका दोनोंका विस्तारतैनिरूपणकरीताहै ॥ तहां ( कारणगुणसंगोऽस्यसदस्योनिजन्मसु ) यहजोवचन पूर्वकथनकन्याथा ॥ तिसवचनके अर्थकूंहीं अब श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वंस्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ ॥ २६ ॥ यावत् । संजायते । किंचित् । सत्त्वम् । स्थावरजंगमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् । तत् । विद्धि । भरतर्षभ ॥ २६ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेभरतवंश विषेश्रेष्ठअर्जुन जितना कोई स्थावरजंगमरूप वस्तु उत्पन्नहोवैहै तिसंसर्वकूं तूं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैउत्पन्नहुआ जान ॥ २६ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तीनलोकोविषे कोईवस्तु स्थावररूप अथवा जंगमरूप उत्पन्नहोवैहै ॥ तिनसर्ववस्तुवोंकूं तूं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैहीं उत्पन्नहुआ जान ॥ तहां अविद्या तथाताअविद्याकाकार्यरूप जितनाकी जड अनिर्वचनीय भावअभावरूप दृश्यप्रपंचहै यहसर्व क्षेत्ररूपहै ॥ और ताक्षेत्रतैविलक्षण तथाताक्षेत्रकाप्रकाशक तथा स्वप्रकाशपरमार्थसत् तथाअसंगउदासीन तथासर्वधर्मोंतैरहित ऐसाजो अद्वितीयचैतन्यहै ताकानाम क्षेत्रज्ञहै ॥ ऐसेक्षेत्र क्षेत्रज्ञ दोनोंका जो मायाकेवशतै परस्परअविवेकनिमित्तक सत्यअनृतमिथुनीकरणरूप मिथ्यातादात्म्यअध्यासहै ॥ यहहीं ताक्षेत्रक्षेत्रज्ञकासंयोगहै ॥ ऐसेक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगतैहीं यहस्थावरजंगमरूपसर्वकार्य उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकारतै तूं निश्चयकर ॥ याकहणेतै यहअर्थसिद्धभया ॥ आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैहीं यहसंसार प्रतीत होवैहै ॥ तास्वरूपकेज्ञानतै यहसंसार नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे स्वमादिकमिथ्यापदार्थ अधिष्ठानवस्तुकेयथार्थस्वरूपकेअज्ञानतैहीं प्रतीतहोवैहैं ॥ तास्वरूपकेज्ञानहुएतै निवृत्तहोइजावैहैं इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अविद्यारूपसंसारकंकथनकरिकै अब तिससंसारकीनिवृत्तिकरणेहारीब्रह्मविद्याकेकथनकरणेवासतै ( यएवंवेत्तिपुरुषम् ) इसपूर्वउक्तवचनकेअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) समंसर्वेषुभूतेषुतिष्ठंतं परमेश्वरम् ॥ विनश्यत्स्वविनश्यंतं यः पश्यति स पश्यति ॥ २७ ॥ समम् । सर्वेषु । भूतेषु । तिष्ठंतम् । परमेश्वरम् । विनश्यत्सु । अविनश्यंतम् । यः । पश्यति । सः । पश्यति ॥ २७ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन नाशवान् सर्वभूतोंविषे सम तथानिर्विकाररूपतैस्थित तथाविनाशतैरहित तथा परमेश्वररूप ऐसेआत्माकूं जोपुरुष देखैहै सोपुरुषहीं देखैहै ॥ २७ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥



॥ टीका ॥ हेअर्जुन उत्पत्तिधर्मवाले जितनैकी स्थावरजंगमप्राणीरूपभूतहैं ॥ कैसेहैंतेसर्वभूत ॥ अनेकप्रकारकेजन्मादिकपरिणामस्वभाववत्ताकरिकै तथागुण प्रधानभावकीप्राप्तिकरिकै विषमस्वभाववालेहैं ॥ इसकारणतैंहीं तेभूत अत्यंतचंचलहैं ॥ अर्थात् क्षणक्षणविषेपरिणामीहैं ॥ तापरिणामकूंनप्राप्तहोइके एकक्षण मात्रभी स्थितहोणेकूंनसमर्थहैंहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसर्वभूत परस्पर बाध्यबाधकभावकूंनप्राप्तहोवैंहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसर्वभूत विनाशवान्हैं ॥ अर्थात् माया गंधर्वनगरादिकोंकीन्यांई दृष्टनष्टस्वभाववालेहैं ॥ जोपदार्थ देखतेदेखतेहीं नष्टहोइजावैंहैं ॥ सो पदार्थ दृष्टनष्टस्वभाववाला कह्याजावैंहैं ॥ ऐसे सर्वस्थावरजंगमरूप भूतोंविषे आत्मादेव समहै ॥ अर्थात् सर्वत्र एकरूपहै तथासर्वदेहोंविषेएकहै ॥ तथा जोआत्मादेव तिनसर्वभूतोंविषे जन्मादिकपरिणामोंतैंरहितताकरिकै निर्विकाररूपतैंस्थितहै ॥ तथा जोआत्मादेव परमेश्वरहै ॥ अर्थात् देहादिकसर्वजडवर्गकेप्रति सत्तास्फूर्तिकेप्रदाताहोणेतैं बाध्यबाधकभावतैंरहितहै ॥ तहां नाशहोणे योग्यवस्तुकूंनबाध्य कहेहैं ॥ और नाशकरणेहारेवस्तुकूं बाधक कहेहैं ॥ ऐसेबाध्यबाधकभावतैंरहितहै ॥ तथा सर्वदोषोंतैंरहितहै ॥ पुनःकैसेहैसोआत्मादेव अविनाशीहै ॥ अर्थात् मायागंधर्वनगरादिकोंकीन्यांई दृष्टनष्टप्राय इससर्वद्वैतकेबाधहुएभी जोबाधकूंनप्राप्तहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ( अविनाशीवा अरेऽयमात्मा ) ॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी यहआत्मादेव नाशतैंरहितहै इति ॥ इसरीतिसैं सर्वप्रकारकरिकै इसजडप्रपंचतैंविलक्षण जोप्रत्यक्आत्माहै ॥ तिसप्रत्यक्आत्माकूं जो अधिकारीजन वेदांतशास्त्ररूपचक्षुकरिकै सर्वजडवर्गतैंभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ सोईहींअधिकारीजन आत्माकूंदेखेहै ॥ जैसे जाग्रत्केबोधकरिकै स्वप्नभ्रमकूंनिवृत्त करताहुआ पुरुषहीं सम्यक्देखेहै ॥ और जोपुरुष इसप्रकारतैं आत्माकूंनहींदेखेहै ॥ सोअज्ञानीपुरुषतों स्वप्नदर्शीपुरुषकीन्यांई भ्रांतिकरिकैविपरीतदेखताहुआभी नहींहींदेखेहै ॥ काहेतैं जोजोभ्रमहोवैंहै ॥ सोसोभ्रम अदर्शनरूपहींहोवैंहै ॥ भ्रमविषे दर्शनरूपता संभवतीनहीं ॥ जैसे रज्जुकूंसर्परूपकरिकै देखताहुआभी भ्रांतपुरुष यहदेवताहै याप्रकारतैंकह्याजावैनहीं ॥ किंतु यह नहींदेखताहै याप्रकारतैंहीं कह्याजावैंहै ॥ काहेतैं ताकल्पितसर्पकाजोदर्शनहै सोदर्शन तारज्जुकाअदर्शनरूप हीहै ॥ तारज्जुकेअदर्शनतैं सोसर्पकादर्शन भिन्ननहींहै ॥ यातैं तासर्पकूंदेखताहुआभी सोभ्रांतपुरुष नहींहींदेखेहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारके सर्वउपाधियोंतैंरहित शुद्धआत्माकेदर्शनतैं साआत्माकाअदर्शनरूपअविद्या निवृत्तहोइजावैंहै ॥ ताअविद्यारूपकारणकीनिवृत्तितैंअनंतर ताकेकार्यरूपसंसारकीभी निवृत्ति होइजावैंहै ॥ ऐसाआत्मज्ञान इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा इति ॥ तहां इसश्लोकविषे यद्यपि श्रीभगवान्हैं ( आत्मानम् ) याप्रकारका आत्मा रूपविशेष्यकावाचकपद कथनकन्यानहीं ॥ तथापि जहां विशेषणवाचकपदहोवैंहैं ॥ तहां विशेष्यवाचकपदकी अर्थतैंहींप्राप्तिहोवैंहै ॥ यहशास्त्रवेत्तापुरुषोंकानियमहै ॥ तेविशेषणवाचकपद ईहांभी ( समं तिष्ठंतं परमेश्वरम् अविनश्यंतम् ) यहविद्यमानहैं ॥ यातैंआत्मारूपविशेष्यकालाभ ईहां अर्थतैंहींप्राप्तहोवैंहै ॥ अथवा ( परमेश्वरम् )



यहपदही ताआत्मारूपविशेषकावाचक जानणा इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वश्लोकउक्तआत्मदर्शनकी श्रीभगवान् फलकरिकैस्तुतिकरेहै ॥ अधिका  
रीजनोंकी ताआत्मदर्शनविषे रुचिउत्पन्नकरणेवासतै ॥

( मू० श्लो० ) समंपश्यन्हिसर्वत्रसमवस्थितमोऽश्वरम् ॥ नदिनस्त्यात्मनात्मानंततोयातिपरांगतिम् ॥ २८ ॥ समम् । पश्यन् ।  
हिं । सर्वत्र । समवस्थितम् । ईश्वरम् । नं । हिंनस्ति । आत्मना । आत्मानं । ततः । याति । परां । गतिम् ॥ २८ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥  
हेअर्जुन सर्वभूतोंविषे सम तथासमवस्थित तथाईश्वररूप ऐसेआत्माकूं देखताहुआ यहविद्वान्पुरुष जिसकारणतैं आत्माकरिकै  
आत्माकूं नहीं नहीं हननकरेहै तिसकारणतैं परम गतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २८ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंविषे जोआत्मा समहै ॥ अर्थात् सर्वत्रएकरूपहै ॥ तथा जोआत्मा समवस्थितहै ॥ अर्थात् जन्मतैं आदिलैके  
विनाशपर्यंत सर्वभावविकारोंतैंरहितहुआ स्थितहै ॥ तथा जोआत्मा ईश्वरहै ॥ अर्थात् सर्वप्राणीयोंकेप्रवृत्तिकाकारणहै ॥ इसप्रकारके पूर्वउक्तसर्वविशेषणोंक  
रिकै विशिष्ट जोआत्माहै तिसआत्माकूं देखताहुआ अर्थात् इसप्रकारकाआत्मादेव मैंहूं याप्रकारतैं शास्त्रदृष्टिकरिकै तिसआत्माकूंसाक्षात्कारकरताहुआ यहविद्वान्  
पुरुष जिसकारणतैं आपणेआत्माकरिकै आपणेआत्माकूं हननकरतानहीं ॥ तिसकारण तैं सोविद्वान्पुरुष परमगतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और इसलोकविषे जितनैंकी  
अज्ञानीजनहैं ॥ तेसर्वहींआज्ञानीजन परमार्थतैंसत्वरूप तथाएकअद्वितीयरूप तथाअकर्ताअभोक्तरूप तथापरमानंदरूप ऐसेआत्माकूं अस्तिभातिरूपव  
स्तुविषेभी नास्तिनभाति इसप्रकारकीप्रतीतिकरावणेविषेसमर्थ ऐसीअविद्याकरिकै आपहीं तिरस्कारकरतेहुए नहुएजैसाकरेहैं ॥ यातैं तेसर्वअज्ञानीजन  
ताआत्माकूं हननहींकरेहैं ॥ अथवा अविद्याकरिकै आत्मत्वरूपकरिकैग्रहणक-याजो देहइंद्रियादिकोंकासंघातरूपआत्माहै ॥ तिससंघातरूपपुरातनआत्माकूं  
हननकरिकैपुण्यपापकर्मके वशतैं पुनः नवीनसंघातरूपआत्माकूं ग्रहणकरेहैं ॥ याकारणतैंभी तेअज्ञानीजन ताआत्माकूं हननहींकरेहैं ॥ यातैं दोनोंप्रकारतैं तेसर्वअज्ञा  
नीजन आत्महत्यारेहींहै ॥ ऐसेआत्महत्यारेअज्ञानीजनोंकूं लक्ष्यकरिकैहीं यहशकुंतलाकावचनरूपस्मृति प्रवृत्तहुईहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( किंतेनकृतंपापंचौरे  
णात्मापहारिणा ॥ योऽन्यथासंतमात्मानमन्यथाप्रतिपद्यते ) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष सत् चित् आनंद विभु आत्माकूं असत् जड दुःख परिच्छिन्नरूपमानेहै ॥  
तिसआत्माकेअपहरणकरणेहारे चौरपुरुषनैं कौनपाप नहींक-याहै ॥ किंतु तिसपुरुषनैं सर्वपापकरेहैं इति ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥  
( असुर्यानामतेलोकाअंधेनतमसावृत्ताः ॥ तांस्तेप्रेत्याभिगच्छन्ति येकेचात्महनोजनाः ॥ ) अर्थयह ॥ दंभदर्पादिकआसुरीसंपदावालेपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेहारे तथा



अंधतमकरिकै आवृत्त ऐसेजे नरकादिकलोकहैं तिनलोकोकूं तेपुरुष मरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ जेपुरुष आत्महनहैं ॥ तहां देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे जेपुरुषआत्मअभिमानकरहैं तिनपुरुषोंकानाम आत्महनहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष आत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंसाक्षाकारकरहै ॥ सोपुरुष देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे आत्मअभिमानकूं शुद्धआत्माकेदर्शनकरिकै नाशकरहै ॥ यातैं आपणेवास्तवस्वरूपकेलाभतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष आपणेआपणे आत्माकूं आपणेआत्माकरिकै नाशकरतानहीं ॥ इसीकारणतैंहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष परागतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् कार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिपूर्वकपरमानंदकीप्राप्तिरूपमुक्तिकूं सोतत्त्ववेत्तापुरुष प्राप्तहोवैहै इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् शुभअशुभकर्मोंकंकरणेहारे देहदेहविषे भिन्नभिन्नहीं आत्माहैं ॥ तथा तिसतिससुखदुःखादिरूपविचित्रफलके भोक्ताहोणेतैं तेआत्मा विषमस्वभाववालेभीहैं ॥ यातैं सर्वभूतोंविषेस्थित एकआत्माकूं समदेखताहुआ यहपुरुष आपणेआत्माकरिकै आपणेआत्माकूं नहीहननकरहै यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

( मू० श्लो० ) प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानिसर्वशः ॥ यःपश्यतितथात्मानमकर्तारंसपश्यति ॥ २९ ॥ प्रकृत्या । एव । च । कर्माणि । क्रियमाणानि । सर्वशः । यः । पश्यति । तथा । आत्मानम् । अकर्तारं । सः । पश्यति ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन मायारूपप्रकृतिनैं हों सर्वप्रकारकरिकै सर्वकर्म करीतेहै इसप्रकार जोविवेकीपुरुष देखताहै तथा क्षेत्रज्ञआत्माकूं जो अकर्ता देखेहै सोईहींपुरुष सम्यक्देखताहै ॥ २९ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै आरंभकरणेयोग्य जेलौकिकवैदिककर्महैं ॥ तेसर्वकर्म सर्वप्रकारकरिकै प्रकृतिनैंहीं करीतेहैं ॥ अर्थात् ॥ देहइंद्रियादिरूपसंघातकेआकारपरिणामकूं प्राप्तहुई तथासर्वविकारोंकाकारणरूपऐसीजा त्रिगुणात्मक भगवत्कीमायाहै ॥ तिसमायारूपप्रकृतिनैंहीं तेसर्वकर्म करीतेहैं ॥ सर्वविकारोंतैंशून्य क्षेत्रज्ञनामापुरुषनैं तेकर्म करीतेनहीं ॥ इसप्रकारतैं जो विवेकीपुरुष शास्त्ररूपचक्षुकरिकै देखेहै ॥ इसप्रकार तिसप्रकृतिरूपक्षेत्रनैं कन्हेहुएजेकर्महैं ॥ तिनसर्वकर्मोंविषे जोपुरुष क्षेत्रज्ञआत्माकूं अकर्तारूपदेखेहै तथा सर्वउपाधियोंतैंरहितदेखेहै तथाअसंगदेखेहै तथासर्वत्रएकदेखेहै तथासर्वत्रसम देखेहै सोपुरुषहीं परमार्थदर्शीहोणेतैं देखताहै ॥ ऐसेआत्माकेस्वरूपकूंनजानणहारे सर्वअज्ञानीजन अंधहींहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जन्ममरणादिकविकारवालेक्षेत्रका तिसतिसविचित्रकर्मकाकर्तापणेकरिकै देहदेहविषे भेदहुएभी तथाविषमताहुएभी निर्विशेषअकर्ताआत्माकेभेदविषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै ॥ जैसे घटमठादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित आकाशकेभेदविषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै तैसे निर्विशेषअकर्ता आत्माके भेद



विषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व अनेकवार प्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ इति ॥ २९ ॥ \* ॥ तहांपूर्व आपाततैं  
क्षेत्रके भेददर्शनका कथनकरिकै क्षेत्रज्ञकेभेददर्शनका निषेधकन्या ॥ अब श्रीभगवान् तिसक्षेत्रकेभेददर्शनकूंभी माधिकत्वरूपहेतुकरिकै निषेधकरेहै ॥  
( मू० श्लो० ) यदाभूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ॥ ततएवचविस्तारं ब्रह्मसंपद्यते तदा ॥ ३० ॥ यदा । भूतपृथग्भावम् । एकस्थम् ।  
अनुपश्यति । ततः । एवं । च विस्तारं । ब्रह्म । संपद्यते । तदा ॥ ३० ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष  
जिसकालविषे भूतोंकेपृथक्भावकूं एकआत्माविषेस्थित देखताहै तथा तिसएकआत्मातैं हीं तिनभूतोंके विस्तारकूं देखताहै  
तिसकालविषे एकब्रह्महीं होवैहै ॥ ३० ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष जिसकालविषे स्थावरजंगमरूप सर्वजडभूतोंके परस्परभिन्नत्वरूप पृथक्भावकूं एकविषेस्थित देखताहै ॥ अर्थात्  
एकहींसत्वरूपअधिष्ठानआत्माविषे तिसभूतोंकेपृथक्भावकूं कल्पितदेखताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोजोवस्तु कल्पितहोवैहै सोसोकल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंभिन्नहोवै  
नहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक तिसरज्जुरूप अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तथा जैसे कनकविषेकल्पित कुंडलकंकणादिकभूषणतिसकनकतैंभिन्नहोवै  
नहीं ॥ तैसे सत्वरूपआत्माविषेकल्पित यहसर्वभूतोंकापृथक्भावभी तिसअधिष्ठानआत्मातैं भिन्नहैनहीं ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंअनंतर जोपुरुष आपणे  
स्वरूपकाविचारकरेहै ॥ अर्थात् यहसर्वजगत् आत्मारूपहींहै आत्मातैंभिन्नसत्तावाला यहजगत् नहींहै ॥ इसप्रकारतैं जोपुरुष विचारकरिकैदेखेहै ॥ इस  
प्रकार तिसअधिष्ठानआत्मातैं सर्वभूतोंकेअपृथक्हुएभी जोपुरुष तिसएकआत्मातैंहीं मायाकेवशतैं तिनसर्वभूतोंकेविस्तारकूं तथापृथक्भावकूं स्वममायाकीन्यांई  
विचारकरिकैदेखेहै ॥ तिसकालविषे सजातीयभेददर्शनकेअभावतैं सर्वअनर्थोंतैंशून्य एकब्रह्मरूपहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( यस्मि  
न्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ॥ तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः ॥ ) अर्थयह ॥ जिसज्ञानअवस्थाविषे इसविद्वान्पुरुषकूं स्थावरजंगमरूपसर्वभूत  
आपणाआत्मारूपहींहोतेभयेहैं ॥ तिसज्ञानअवस्थाविषे आत्माकेएकअद्वितीयभावकूंदेखेहारेतिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं शोक तथामोह कदाचित्भीहोवैनहीं इति ॥  
तहां ( प्रकृत्यैवचकर्माणि ) इसपूर्वश्लोकविषेतों श्रीभगवान्ने क्षेत्रज्ञआत्माकेभेदका निषेधकन्याथा ॥ और ( यदाभूतपृथग्भावम् ) इसश्लोकविषेतों श्रीभगवान्ने  
क्षेत्ररूपआत्मपदार्थोंकेभेदकाभी निषेधकन्याहै ॥ इतनीं इनदोनोंश्लोकोंविषे विशेषताहै इति ॥ ३० ॥ \* ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्माकूं स्वभावतैं



अकर्त्तापणा हुएभीशरीरकासंबंधरूपउपाधिकरिंके कर्त्तापणा होवेंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूनिवृत्तकरताहुआ श्रीभगवान् ( यःपश्यतितथात्मानमकर्त्तरिंस्पश्यति )  
इसपूर्वउक्तवचनकेअर्थकू अब स्पष्टकरिंकेवर्णनकरेहै ॥

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ॥ शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते ॥ ३१ ॥ अनादित्वात् । निर्गुणत्वात् । परमा  
त्मा ॥ अयम् । अव्ययः । शरीरस्थः । अपि । कौंतेय । न । करोति । न । लिप्यते ॥ ३१ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन अनादिहो  
णेते तथा निर्गुणहोणेते यह परमात्मा अव्ययहै ऐसाआत्मा इसशरीरविषेस्थित हुआ भी नहीं करेहै नहीं लिप्यायनमाहोवैहै  
॥ ३१ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन परमेश्वरतैंअभिन्नहोणेते परमात्मारूप जोयह अपरोक्ष प्रत्यक्षआत्माहै ॥ सोयहआत्मा अव्ययहै ॥ तहां जन्ममरणादिकविकारोंकानाम  
व्ययहै ॥ ताविकाररूपव्ययकू जोनहींप्राप्तहोवैहै ताकानाम अव्ययहै ॥ अर्थात् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितवस्तुकानाम अव्ययहै ॥ सोव्ययदोप्रकारकाहो  
वैहै ॥ एकतों धर्मोंकेस्वरूपकूहीं उत्पत्तिवालाहोणेते व्ययहोवैहै ॥ औरदूसरा ताधर्मोंकेस्वरूपकीअनुत्पत्तिहुएभी ताकेधर्मोंकू उत्पत्तिवालाहोणेते व्यय  
होवैहै ॥ तहां श्रीभगवान् आत्माविषे प्रथमव्ययका निषेधकरेहै ( अनादित्वात्इति ) तहां पूर्व असत्त्वअवस्थाकानाम आदिहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकी  
आपणीउत्पत्तितैंपूर्व जा असत्त्वअवस्थाहै ॥ साअसत्त्वअवस्थाहीं तिनघटादिकोंकी आदिहै ॥ साआदि जिसवस्तुकीनहींहोवै तावस्तुकानाम अनादिहै ॥ ऐ  
साअनादि सर्वकालविषेसत्यआत्माहै ॥ ऐसाअनादिहोणेतेहीं यहआत्मादेव कारणकेअभाववालाहोणेते जन्मकूप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेते जोवस्तु तिसआदिवा  
लाहोवैहै ॥ तिसवस्तुकाहीं जन्महोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ तिसआदिवालेहोणेते जन्मकूप्राप्तहोवैहै ॥ और आत्माकी साआदिहैनहीं ॥ याते आत्माका  
जन्मभीहोवैनहीं ॥ और ताजन्मतैंपश्चात्हीं मरणपर्यंत सर्वभावविकार प्राप्तहोवैहै ॥ ताजन्मरूपआदिविकारकेअभावहुए इसआत्मादेवकू तेमरणपर्यंत सर्वभा  
वविकारभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ याते यहआत्मादेव आपणेस्वरूपतैं तिसजन्मादिविकाररूपव्ययकू प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ( नतस्यकश्चिज्जनितानचाधिपः ॥ )  
अर्थयह ॥ तिसआत्मादेवका कोईभीउत्पन्नकरणेहाराकारण नहींहै ॥ तथा तिसआत्मादेवका कोईभीअधिष्ठाता नहींहैइति ॥ अब दूसरेव्ययका निषेध  
करेहै ( निर्गुणत्वात्इति ) हेअर्जुन यहआत्मादेव सर्वधर्मोंतैंरहितहोणेतेभी अव्ययहै ॥ काहेते इसलोकविषे जितनैकी रूपरसादिकधर्महैं ॥ तिनसर्व  
धर्मोंका आपणेधर्मोंकेसाथि तादात्म्यहींहोवैहै याते तेरूपादिकधर्म आपणेधर्मोंकू विकारभावकीनहींप्राप्तिकरिंके उत्पन्न वानाश होवैनहीं ॥ किंतु आपणेधर्मोंकू



विकारभावकीप्रातिकरिकैहीं तेधर्म उत्पन्नहोवैहैं तथानष्टहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं तिनसर्वधर्मोंतैरहितहै ॥ यातैं यह आत्मादेव तिनधर्मोंकेव्यनकारिकै भी व्ययकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ( अविनाशीवाअरेऽयमात्मानुच्छित्तिधर्मा ) अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी यहआत्मादेव स्वरूपतैंभी नाशादिकविकारोंतैरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशादिकविकारोंकरिकैभी नाशादिकविकारोंकंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव सर्वधर्मोंतैरहितहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहआत्मादेव जन्म अस्ति वृद्धि विपरिणाम अपक्षय विनाश इनषट्भावविकारोंतैरहितहै इसकारणतैं यहआत्मादेव आध्यासिकसंबंधकरिकै इसशरीरविषेस्थितहुआभी तिसशरीरके प्रवृत्तहुएभी यहआत्मादेव किंचित्मात्रभी करतानहीं ॥ जैसे आध्यासिकसंबंधकरिकै जलविषेस्थितहुआभी सूर्य ताजलकेचलायमानहुएभी चलायमानहोवैनहीं ॥ तैसे आध्यासिकसंबंधकरिकै इसशरीरविषेस्थितहुआभी यहआत्मादेव ताशरीरकेप्रवृत्तहुएभी किंचित्मात्रभी करता नहीं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहआत्मादेव किसीभी लौकिकवैदिककर्मकूं करतानहीं ॥ तिसकारणतैं यहआत्मादेव किसीभीकर्मकेफलकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ काहेतैं इसलोकविषे जोजोपुरुष जिसजिसशुभअशुभकर्मकूंकरेहै ॥ सोसोपुरुषहीं तिसतिसकर्मके सुखदुःखरूपफलकरिकैलिपायमानहोवैहै ॥ तिसतिसकर्मकूंनहींकरताहुआपुरुष तिसतिसकर्मकेफलकरिकैलिपायमानहोवैनहीं ॥ और यहआत्माभीकर्मकूंकरतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव किसीभीकर्मकेफलकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तहां ( इच्छाद्वेषःसुखंदुःखम् ) इत्यादिकवचनकरिकै तिनइच्छाद्वेषादिकोंविषे क्षेत्रकाहींधर्मपणा कथनकन्याहै ॥ और ( प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानि ) इसवचनकरिकै सर्वकर्मोंविषे मायाकाहींकार्यपणा कथनकन्याहै ॥ असंगआत्माका कोईधर्मनहींहै तथाकोईकार्यनहींहै ॥ याकारणतैंहीं परमार्थदर्शीविद्वान्पुरुषोंकूं सर्वकर्मोंकेअधिकारकाअभाव पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इतनैकरिकै आत्माविषे सर्वधर्मोंतैरहितपणाकथनकरिकै स्वगतभेदभी निवृत्तकन्या ॥ और ( प्रकृत्यैवचकर्माणि ) इसश्लोकविषेतों पूर्व सजातीयभेद निवृत्तकन्याथा ॥ और ( यदाभूतपृथग्भावम् ) इसश्लोकविषेतों पूर्व विजातीयभेद निवृत्तकन्याथा ॥ और ( अनादित्वात्त्रिगुणत्वात् ) इसश्लोकविषेतों स्वगतभेद निवृत्तकन्याहै ॥ यातैं सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद इनतीनभेदोंतैरहितहोणेतैं अद्वितीयब्रह्मरूपहीं यहआत्माहै यहअर्थसिद्धभया इति ॥ तहां समानजातिवालेपदार्थोंका जो परस्परभेदहै ताकानाम सजातीयभेदहै ॥ जैसे एकवृक्षविषे दूसरेवृक्षकाभेदहै ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोंका जो परस्परभेदहै ताकानाम विजातीयभेदहै ॥ जैसे तिसीवृक्षविषे पाषाणकाभेदहै ॥ और एकहींवस्तुविषे आपणेअवयवोंकरिकैजोभेदहै ताकानाम स्वगतभेदहै ॥ जैसे तिसएकहींवृक्षविषे शाखा पत्र पुष्प फल इत्यादिक अवयवोंकरिकैभेदहै ॥ और ( एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः ) यहश्रुति सर्वभूतोंविषे एकहींआत्मा कहेहै ॥ ताआत्माकेसमानजातिवाला दूसराकोई आत्माहैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे सजा



तीयभेद संभवैनहीं ॥ और ( अतोऽन्यदार्तम् ) यहश्रुति आत्मातैभिन्नसर्वजगत्कूंकल्पितकहेहै ॥ और कल्पितवस्तुकी अधिष्ठानतैभिन्नसत्ताहोवैनहीं ॥ यातै आत्माविषे विजातीयभेदभी संभवैनहीं ॥ और ( निष्कलम् निर्गुणम् निष्क्रियम् शांतम् ) यहश्रुति आत्माकू निरवयव निर्गुण निष्क्रिय कहेहै ॥ यातै आत्माविषे स्वगतभेदभी संभवैनहीं इति ॥ ३१ ॥ \* ॥ तहां शरीरविषेस्थितहुआभी यहआत्मादेव आप असंगहोणेतै तिसशरीरकेकर्मोंकरिकै लिपाय मानहोतानहीं ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे कथनकन्या ॥ अब श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तअर्थविषे दृष्टांतकूंकथनकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितोदेहेतथात्मानोपलिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा । सर्वगतम् । सौक्ष्म्यात् । आकाशम् । न । उपलिप्यते । सर्वत्र । अवस्थितः । देहे । तथा । आत्मा । न । उपलिप्यते ॥ ३२ ॥ ( इतिप० ) ॥ हेअर्जुन जैसे सर्वत्रव्यापकभी आकाश असंगस्वभाववालाहोणेतै नही लिपायमानहोवैहै तैसे सर्व देहोंविषे स्थितहुआभी यह आत्मादेव असंगस्वभाववालाहोणेतै नही लिपायमानहोवैहै ॥ ३२ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे घटमठतैआदिलैके जितनैकी दुष्ट तथाअदुष्ट मूर्तद्रव्यहैं ॥ तिनसर्वद्रव्योंविषे अंतर तथा बाह्यव्याप्यकरिकैवर्तमानहुआभी यह आकाश सूक्ष्महोणेतै अर्थात् असंगस्वभाववालाहोणेतै तिनमूर्तद्रव्योंके सुगंध दुर्गंध वर्षा आतप अग्नि धूम रज पंक इत्यादिकगुणदोषोंकरिकै लिपायमान होतानहीं ॥ तैसे देव मनुष्य पशु इत्यादिकऊचनीचसर्वदेहोंविषे अंतर बाह्य सर्वत्रव्याप्यकरिकैस्थितहुआभी यहआत्मादेव असंगस्वभाववालाहोणेतै तिनदेहा दिकृत शुभअशुभकर्मोंकरिकै लिपायमानहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ( असंगोनहिसज्जते ) ॥ अर्थयह ॥ यह आत्मादेव असंगहोणेतै किसीभीवस्तुकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ३२ ॥ \* ॥ किंवाइसआत्मादेवविषे केवल असंगतारूपहेतुतैहीं अलेपतानहींहै ॥ किंतु प्रकाशकत्वरूपहेतुतैभी इसआत्मा देवविषे सअलेपताहै ॥ इसअर्थकू अब श्रीभगवान् दृष्टांतकरिकैकथनकरेहै ॥

( मू० श्लो० ) यथाप्रकाशयत्येकःकृत्स्नंलोकमिमंरविः ॥ क्षेत्रक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत ॥ ३३ ॥ यथा । प्रकाशयति । एकः । कृत्स्नम् । लोकम् । इमम् । रविः । क्षेत्रम् । क्षेत्री । तथा । कृत्स्नम् । प्रकाशयति । भारत ॥ ३३ ॥ ( इतिपदच्छेदः ) ॥ हेअर्जुन जैसे एकही सूर्य ईस सर्व लोककू प्रकाशकरेहै तैसे क्षेत्रज्ञनामाआत्मा ईससर्व क्षेत्रकू प्रकाशकरेहै ॥ ३३ ॥ ( इतिपदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे एकहीसूर्य इसरूपवान्देहादिकसर्ववस्तुवोकू प्रकाशकरेहै ॥ परंतु तिनप्रकाश्यरूपदेहादिकवस्तुवोकै धर्मोंकरिकै सोसूर्य लिपायमानहो



तानहीं ॥ तथा तिनप्रकाश्यरूपदेहादिकवस्तुवोंके भेदकरिके सो सूर्यभेदकूँभी प्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे सो एकही क्षेत्रज्ञ आत्मा पूर्वउक्तसर्वक्षेत्रकूँ प्रकाशकरेहै ॥ इस कारणतैंहीं सो क्षेत्रज्ञ आत्मा तिसप्रकाश्यरूपक्षेत्रके धर्मोंकरिके लिपायमानहोवैनहीं ॥ तथा तिसप्रकाश्यरूपक्षेत्रके भेदकरिके सो क्षेत्रज्ञ आत्मा भेदकूँ प्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनै कहनेकरिके श्रीभगवान् नैं यह अनुमानसूचनकन्या ॥ क्षेत्रज्ञ आत्मा क्षेत्रके धर्मोंकरिके लिपायमानहोवैनहीं तथा तिसक्षेत्रज्ञके भेदकरिके भेदकूँ प्राप्तहोवैनहीं तिसक्षेत्रका प्रकाश होणेतैं ॥ जो जिसवस्तुका प्रकाशकहोवैहै ॥ सो तिसप्रकाश्यवस्तुके धर्मोंकरिके लिपायमानहोवैनहीं तथा तिसप्रकाश्यवस्तुभेदकरिके भी भेदकूँ प्राप्तहोवैनहीं ॥ जैसे सूर्यहै इति ॥ किंवा क्षेत्रज्ञ आत्मा क्षेत्रके धर्मोंकरिके लिपायमाननहींहोवैहै यह वात्ता किवल अनुमानप्रमाणकरिकेहीं सिद्धनहींहै ॥ किंतु ॥ साक्षात्श्रुतिभगवतीभी इसअर्थकूँ कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ॥ एकस्तथा सर्वभूतांतरात्मानं लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥ ) अर्थ यह ॥ जैसे सर्वलोकका चक्षुरूपसूर्य चक्षुके विषयरूप बाह्यपदार्थोंके दोषोंकरिके लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे सर्वपदार्थोंका प्रकाशकरणेहारा तथा देहादिकसंघाततैं भिन्न ऐसा जो सर्वभूतोंका अंतरात्माहै ॥ सो एक अद्वितीय आत्मा भी प्रकाश्यरूपदेहादिकोंके दुःखोंकरिके लिपायमानहोवैनहीं इति ॥ ३३ ॥ \* ॥ अव श्रीभगवान् इसत्रयोदशे अध्यायके अर्थका फलसहित उपसंहारकरेहै ॥

( मू० श्लो ) क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमंतरं ज्ञानचक्षुषा ॥ भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्याति ते परम् ॥ ३४ ॥ इति श्रीमद्भगवत्सूत्रोक्तं ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञनिर्देशयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः स ॥ १३ ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः । एवम् । अंतरम् । ज्ञानं चक्षुषा । भूतप्रकृतिमोक्षं । च । ये । विदुः । र्याति । ते । परम् ॥ ३४ ॥ ( इति पदच्छेदः ) ॥ हे अर्जुन जे पुरुष क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके विलक्षणताकूँ पूर्वउक्तप्रकारतैं ज्ञानरूपचक्षुकरिके जानतेहैं तथा भूतोंके कारणरूपमायाके अत्यन्ताभावकूँ जानतेहैं ते अधिकारी पुरुष कैवल्यमुक्तिकूँ प्राप्तहोवैहैं ॥ ३४ ॥ ( इति पदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन पूर्वकथनकन्या जो क्षेत्रहै तथा क्षेत्रज्ञहै ॥ तिनदोनोंके विलक्षणताकूँ जे पुरुष ज्ञानरूपचक्षुकरिके जानतेहैं अर्थात् यह क्षेत्रतौ जडहै तथा कर्ताहै तथा विकारीहैं तथा परिच्छिन्नहै ॥ और यह क्षेत्रज्ञ आत्मा तौ चेतनहै तथा अकर्ताहै तथा अविकारीहै तथा अपरिच्छिन्नहै ॥ इसप्रकारकी दोनोंकी विलक्षणताकूँ जे अधिकारी पुरुष गुरुशास्त्रके उपदेशजन्य आत्मज्ञानरूपचक्षुकरिके जानतेहैं ॥ तथा जे अधिकारी पुरुष भूतप्रकृतिके मोक्षकूँ जानतेहैं ॥ तहां आकाशादिकसर्वभूतोंका कारणरूप जा माया अविद्या अज्ञान इत्यादिक नामोंवाली परमेश्वरकी शक्तिहै ॥ जिसमायाशक्तिकूँ ( मायांतु प्रकृतिविद्यात् ) इत्यादिक श्रुतियां कथनकरेहैं ॥



तामायाशक्तिकानाम भूतप्रकृतिहै ॥ ताभूतप्रकृतिकी जा मैत्रलरूपहूं याप्रकारकी परमार्थभूतआत्मविद्याकरिकै आत्यंतिकनिवृत्तिहै ताकानाम भूतप्रकृतिमोक्षहै ॥  
 ऐसेभूतप्रकृतिमोक्षकूंभी जेअधिकारीपुरुष तिसज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं ॥ तेअधिकारीजनहीं परमार्थआत्मवस्तुस्वरूप कैवल्यमुक्तिकंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसी कैवल्यमु  
 क्तिकंप्राप्तहोइकै तेअधिकारीजन पुनःदेहकूंग्रहणकरैनहीं ॥ यातैयहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष पूर्वउक्तअमानित्वादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहै ॥ तथा पूर्वउक्त  
 क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके विलक्षणताज्ञानवालाहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूंहीं सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिकरिकै परमपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातै परमपुरुषार्थकीइच्छावान्  
 पुरुषनै तेअमानित्वादिकसाधन अवश्यकरिकैसंपादनकरणे ॥ तथा सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकाविवेकज्ञान अवश्यकरिकैसंपादनकरणा इति ॥ ३४ ॥ \* ॥ इति  
 श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्धनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां त्रयोदशो  
 ऽध्यायः समाप्तः ॥ १३ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

इति त्रयोदशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १३ ॥





ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्यभ्योनमः ॥ अथ चतुर्दशाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वत्रयोदशोऽध्यायविषे ( यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ) इसश्लोककरिके श्रीभगवान् नैं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके संयोगतैं सर्वस्थावरजंगमभूतोंकी उत्पत्ति कथन करी थी ॥ तहां ईश्वरकूं नहिं अंगीकार करणे हारे निरीश्वरसांख्यमतका खंडन करिके ताक्षेत्रक्षेत्रज्ञके संयोगकूं ईश्वरके आधीनपणा अवश्य करिके कहा चाहिये ॥ तथा तिसत्रयोदशोऽध्यायविषे ( कारणं गुणसंगोऽस्य सदस्यो निजन्मसु ) इसवचन करिके श्रीभगवान् नैं गुणोंके संगकूं नहिं जन्मका कारण कहा था ॥ तहां किसगुणविषे किसप्रकार करिके संग होवै है ॥ तथा ते गुण कौन हैं ॥ तथा ते गुण किसप्रकार करिके इसजीवकूं बंधायमान करे हैं ॥ यह अर्थ भी अवश्य करिके कहा चाहिये ॥ तथा ( भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्याति ते परम् ) इसवचन करिके श्रीभगवान् नैं भूतप्रकृतिके मोक्षका कथन कन्या था ॥ तहां भूतप्रकृतिनामवाले सत्त्वादिकगुणों तैं इस अधिकारीपुरुषका किसप्रकार करिके मोक्ष होवै है ॥ तथा तिसमुक्तहुए पुरुषके कौन लक्षण हैं ॥ यह अर्थ भी अवश्य करिके कहा चाहिये ॥ इससर्वअर्थकूं विस्तारतैं कहणे वासतैं श्रीभगवान् नैं यह चतुर्दश अध्याय प्रारंभ करी ता है ॥ तहां श्रोतापुरुषोंकी रुचि उत्पन्न करने वासतैं श्रीभगवान् आगे वक्ष्यमाण अर्थकी दोश्लोकों करिके स्तुतिकरता हुआ कहे है ॥

( मू० श्लो० ) श्रीभगवानुवाच ॥ परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् ॥ यज्ज्ञात्वामुनयः सर्वे परांसिद्धिमितोगताः ॥ १ ॥ परं । भूयः । प्रवक्ष्यामि । ज्ञानानां । ज्ञानम् । उत्तमं । यत् । ज्ञात्वा । मुनयः । सर्वे । परां । सिद्धिम् । ईतः । गताः ॥ १ ॥ ( इति पदच्छेदः ) ॥ हे अर्जुन ज्ञानसाधनोंके मध्यमें उत्तम तथा श्रेष्ठ ऐसे ज्ञानसाधनकूं मैं भगवान् पुनः भी तुमारे प्रति कथन करता हूं जिससाधनकूं अनुष्ठान करिके सर्व मुनि ईसदेहबंधनतैं परंम कैवल्य मुक्तिकूं प्राप्त होते भये हैं ॥ १ ॥ ( इति पदार्थः ) ॥

॥ टीका ॥ तहां ( ज्ञायतेऽनेनेति ज्ञानम् ) अर्थ यह ॥ जिससाधन करिके आत्मवस्तु जान्या जावै है ताका नाम ज्ञान है ॥ या प्रकारकी व्युत्पत्तिकरिके ईहां ज्ञानशब्द परमात्मविषयकज्ञानके साधनका वाचक है ॥ कैसा है सो ज्ञान पर है ॥ अर्थात् परमात्मरूप परवस्तुविषयक होने तैं श्रेष्ठ है ॥ पुनः कैसा है सो ज्ञान ज्ञानोंके मध्यविषे उत्तम है ॥ अर्थात् ( तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेन ) इसश्रुतिनैं विधानकन्ये जे यज्ञदानादिक ज्ञानके बहिरंगसाधन हैं ॥ तिनसर्वबहिरंगसाधनोंके मध्यविषे उत्तमफलका हेतु होने तैं उत्तम है ॥ कोई पूर्वउक्त अमानित्वादिकसाधनोंके मध्यविषे सो ज्ञान उत्तमनहिं है ॥ काहे तैं ते अमानित्वादिकसाधन भी अंत रंगसाधन होने तैं उत्तमफलके ही हेतु हैं ॥ तहां ( परम् ) इसविशेषण करिके तौ तिसज्ञानविषे उत्कृष्टवस्तुविषयकत्व कथन कन्या ॥ और ( उत्तमम् ) इसविशेषण करिके तौ